आर्य समाज पुस्तकालय ...

—०—ओ३म्—०—

पाखण्डमतकुठार

अर्थात्

कबीर आदि के पाखण्डमतों के काटने का शस्त्र

स्वामी सत्यानन्दसरस्वती रचित

(जोकि पहिले कबीरपन्थ में रह चुके थे)

जिस को

सत्यव्रतशर्मा द्विवेदी ने स्वकीय वेदप्रकाश यन्त्रालय इटावा में मुद्रित कर प्रकाशित किया

तृतीयवार १००० } संवत् १९६० सन् १९०४ { मूल्य ≡)

गुरु विरजानन्द ...

पु. परिग्रहण क्रमांक ...

दयानन्द महिला महाविद्या...

4841

ओ३म्

अथ श्री पाखण्डमतकुठार स्वामीसत्यानन्दविरचितः॥

—*—

ओम्—सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भाषार्थः—(सहनाव) हे सर्वशक्तिमन् हे ईश्वर आपकी कृपा रक्षा और सहायता से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें (सह नौ भु०) और हम सब लोग प्रेम प्रीतिसे मिल के सब से उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्त्ति राज्य आदि सामग्री से आनन्द को आप के अनुग्रहसे सदा भोगें (सहवीर्यम्) हे कृपानिधे! आपके सहायसे हम लोग एक दूसरेके सामर्थ्य को पुरुषार्थसे सदा बढ़ाते रहैं (तेजस्विना) और हे प्रकाशमय हे सर्वविद्या के देनेवाले परमेश्वर आप के सामर्थ्य से ही हम लोगों का पढ़ा और पढ़ाया सब संसार में प्रकाश को प्राप्त होय और हमारी विद्या सदा बढ़ती रहे (मा, विद्विषा०) हे प्रीतिके उत्पादक आप ऐसी कृपा कीजिये कि जिससे हम

लोग परस्पर विरोध कभी न करें किन्तु एक दूसरे के मित्र होके सदा वर्त्तें (ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः)

हे भगवन ! आपकी करुणासे हम लोगों के तीन ताप एक (आध्यात्मिक) जो कि ज्वरादि रोगोंसे शरीरमें पीड़ा होतीहै दूसरा (आधिभौतिक) जो दूसरे प्राणियों से होताहै और तीसरा (आधिदैविक) जो मन और इन्द्रियों के विकार अशुद्धि और चंचलता से क्लेश होता है इन तीनों तापोंको आप शान्त अर्थात् निवारण कीजिये जिससे हमलोग सुख से ऋग्वेदादिके सत्यार्थको यथावत् जानके सब मनुष्यों का उपकार करें यही आपसे चाहतेहैं कृपा करके हम लोगोंको सब दिनों के लिये सहाय कीजिये (ब्रह्मानन्त०) जो ब्रह्म अनन्त सर्वान्तर्यामी पूर्णशक्तिमान् सर्वज्ञ सर्वप्रजारूप अनुपम जीवोंका स्वामी कर्मानुसार न्याय से कर्मफल भुगाने वाला अर्थात् अव्याकृत परमाणुओंसे अखिललोकान्तरों को उत्पन्न तथा पालन करनेवाला है ॥ उसकी हम सदा उपासना करें ॥

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः । अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः ॥ १ ॥

यह श्वेताश्वतर उपनिषद् का वचनहै—प्रकृति जीवऔर परमात्मा तीन अज अर्थात् जिनका जन्म कभी नहीं होत

और न कभी ये जन्म लेते हैं अर्थात् ये तीन जगत् के कारण हैं इनका कारण कोई भी नहीं इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फंसता है और उस में परमात्मा न फंसता और न उस का भोग करता है ऐसे परमात्मा को नमस्कार स्मरण कर पश्चात् श्री परमहंसपरिव्राजकाचार्य जो कि जीवों को अविद्यान्धकार से छुड़कर यथार्थ ज्ञानरूपी सूर्यको प्राप्त करानेहारे श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी थे उन उन को नमस्कार जिन्होंने पाखण्ड असत्मतों का खण्डन और सत्य वेदमतको मण्डन परमपुरुषार्थ से कर सृष्टि की उत्पत्ति मुक्ति उपासनादि विषय मेंसत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकादि ग्रन्थ प्रकाश कर दिये हैं जिन से सत्यासत्य कर्त्तव्याऽकर्त्तव्य का भली भांति निश्चय हो कर नास्तिक पाखंड मतों का परदा खुल जाता है सर्व मनुष्यमात्र को यही कल्याणकारी पुस्तकें पढ़ना सुनना चाहिये ॥

इस के आगे मैं (सत्यानन्द) अपनी सम्पूर्ण दिनचर्य्या सज्जनों के सामने निवेदन करता हूं कि मेरा जन्म जिले जवनपुर परगने गड़वाड़ गांव ताजनपूर श्रीयुत शिवसीवराम शर्मा परा मिश्र गौतमगोत्र पितासे हुआ था दश साल पिता ने फ़ारसी तथा नागरी आदि विद्या पढ़वाया तत्पश्चात् मुझे यह सोचअपारहोने लगा कि यह विचित्रजगत् कैसे बना और शरीरें में नाना रोग शोक [illegible] जन्ममरण आदि [illegible] क्यों हुआ

रता है इसी विरह में व्याकुल हो मुम्बई चला गया वहां शै-
वशाक्तवैष्णवादि के जाली पुस्तकें सुनता पढ़ता और देवी
शिव रामचन्द्र कृष्णचन्द्रादि की मूर्त्तियां पूजन किया करता
था एक दिन कई मनुष्यों ने कहा कियहां वालकेश्वर में स्वामी
दयानन्द सरस्वती जी आये हैं बड़े विद्यावान् दिग्विजयी हैं
मैं सुन श्रीयुत स्वामी जी के पास गया दर्शन भी अभिलाषा-
नुकूल हुआ करुणादृष्टि से अवलोकन कर पूछा आप कहां से
आये मैंने अपना पूर्वहाल कह सुनाया इतने में स्वामी जी
धोवी तालावके पास एक सेठ के स्थान पर धर्मव्याख्यान देने
चले मैं भी पश्चात् जाय के सभावार्त्ता सुनी जब शाम को डेरा
पर आया तब सब ब्राह्मण वैरागियों ने कहा कि दयानन्द
मूर्त्ति और औतार उपासना नहीं मानते उन की बातें मत
सुनना न पास जाना मेरी वालबुद्धि को पलटाय एक ईश्वर-
दास नामक खाखीरामायण पढ़ा कंठी बांध (ओम् जानकी-
नाथायनमः) मन्त्र उपदेश कर बोला „तीर्थ करो राम जा-
नकी की मूर्त्तिसेवन करो एक बैल का भार" अटखर वटखर
पीतल पाथल की मूर्त्तियां रखता था मेरे से कहा कि तीनों
समय स्नान कर इन पार्षदों की पूजा अर्चन किया कर, मैंने
कहा तीनों समय स्नान पूजा करने से रोगी हो विद्या पढ़ने
से विमुख हो जाऊंगा उस समय भगवद्गीता भाषाटीका सं-
युक्त मैं पढ़ता था उस में परमेश्वर सर्वज्ञ सर्वव्यापक नित्य

और जीव का रूप भी चैतन्य विदेह जरादि अवस्थारहित लिखा देख दिनरैन सोचने लगा कि पीतल पाथर की तस्वीरें या श्यामघनसलाकार रामकृष्णादि की शरीरोंकी जो जरामृत्यु को प्राप्त हुई हैं ऐसे विदेह जीव की मालिक मुक्तसुखदाता कैसे हो सकती हैं ? और जो तुलसीदास ने खास परमात्मा का औतार होना मनु, सतरूपा के तपफल से रामायण में रामचन्द्र जी लिखा है सो मनुजी ने मनुस्मृति में यह कहीं नहीं लिखा कि जब मैं दम्पति अयोध्या दशरथ कौसल्या नाम से प्रगट हो ऊंगा तब परमात्मा बेटा हो औतार लेगा किन्तु यह तो लिखा है कि मैं घोर तप कियो उस का फल मुझे मरीच्यादि दश पुत्र प्राप्त हुए और भी तुलसीदास की असंभव गपोड़ी सुनिये—लिखा है कि महावीर ने जन्मते ही समय और अंजनी की आज्ञा से सूर्य को लाल फल समझ लील लिया लंका मछली की हड्डी पर बनाया गया था इस कथा को इस प्रकार लिखा है कि गरुड़ अहंकारी विष्णु से आज्ञा ले पृथ्वी को दड़ान में तय किया चाहा सो बहुत दिनों तक उड़ते रहे थक के जब २ बैठे तब उस मछली के पेट से बाहर न हो सके जब बहुत भुखाने तब उस मछली को उठा नीलगिरि पर बैठ खाया चाहा इतने में नीलगिरि पाताल को दबि चला तब गरुड़ उसे सूर्य के समीप ले गये सूर्य ने पूंछ महाराज ! क्यों आगमन हुआ उन्हों ने कहा मैं इसे खाया चाहता

है सूर्य ने कहा कनिष्ठिका यानी छोटी अंगुली पर बैठकर खाओ तब खाने लगा सो वह मछली समुद्र में गिर पड़ी और उस पर विश्वकर्मा ने लंका बनायी भला ऐसी २ झूंठी बातों को कोई बुद्धिमान् कभी स्वीकार कर सकता है? क्योंकि वेदों में सूर्य एक बड़ा भारी लोक पृथिव्यादि लोकों का धारण आकर्षण करने वाला लिखा है तब उसको क्षुद्र मुख से महावीर कैसे लीलगये और बेशरीर इन्द्रियवाला होके वे गरुड़ कैसे बोले और कैसे अंगुली पर बैठा सक्ता है इसी तरह बहुतसी बातें वेदविरुद्ध गोस्वामी महाराज ने बकमारी हैं जिस को हजारों बालबुद्धि लोग पढ़ि सुनि बहके फिरते हैं ॥

अविद्यायां बहुधा वर्त्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः ॥ यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते । मु॰ खं॰ २ । मं॰ ९ ॥

जो बहुधा अविद्या में रमण करने वाले बालबुद्धि लोग हम कृतार्थ हैं ऐसे मानते हैं जिस को केवल कर्मकाण्डी लोग राग से मोहित हो कर नहीं जान और जना सकते वे आतुर होके जन्म मरणरूप दुःख में गिरे रहते हैं अर्थात् इसी प्रकार विचारते भ्रमण करते उस देश से लौट के इस देश में आया और कबीर पल्टु सत्यनामीकृत ग्रंथ और भागवतादि को इ- कट्ठा कर पढ़ा करता था क्योंकि देहातों में बहुत कर ऐसे ही

कुत्सित पुस्तकें संगतें भरी हैं । इतने में एक ब्राह्मण मुझे मुकाम बडैया दसरे वा जिले जवनपूर कबीरपन्थी विवेक पति के पास ले गया देखा महन्त लेटे हुये थे मैंने पूंछा परमात्मा कैसा है और जीव कैसे उपासना कर मुक्त हो सकता है ॥

महन्त बोले—परमात्मा शब्दरूप अधर यानी आकाश में रहता है जीव सुरति निरति से मिल सकता है और मिलके शब्दरूप परमात्मा ही हो जाता है पुनः कभी जन्म नहीं होता क्योंकि-

आदि ब्रह्म ज्यों जल है भाई जीव तरंगसमान ।
सदनव्यारि विषय जब मिटगै थोरे माह थिरान ॥

इत्यादि प्रमाण मदन कायस्थ के शब्द विलास पुस्तक का दिया जो कि इन का प्रथमाचार्य है चालीस साल हुआ इस मनुष्य ने जवनपूर शहर के पश्चिम खरौना गांव में पन्थ चलाया है महन्त ने पूछा तुम कौन मन्त्र जपते कौनसा ध्यान करते हो । मैंने (ओ३म् जानकीनाथाय नमः) मन्त्र कहा और श्यामकमलाकार धनुष् बाण लिये जानकी अर्धाङ्गी सहित आभूषण रत्नादिक वनमाल धारे सुशोभित हैं यही ध्यान कह सुनाया ॥

उर मनिहार पदिक की शोभा। विप्र चरन देखत मन लोभा ॥

महन्त बोले—वाह जी ! तुम कल्पना ही को परमेश्वर मानते हो मैंने कहा क्यों यह श्रामल्यानारायण रामायणादि में लिखे हैं ॥

महन्त—वाह ! भला कहो श्यामतन आभूषण धारे हुयेका हर एक अंग कल्पना ही से रचित कर ध्यानावस्थित होते हो या नहीं ? मैंने कही हां । उन्हों ने कहा क्या कल्पना से बनी मूर्त्ति कल्पना करने वाले आत्म की मालिक हो सकती है क्योंकि कल्पना तो जड़ है: कल्पित वस्तु भी जड़ हैं मालिक चैतन्य नहीं और ॥

दन्तओष्ठतालुजिह्वानां क्षरस्सर्वाणिउच्यते ॥

अर्थात् दांत ओठ तालु जिह्वासे उच्चरे शब्द मन्त्र भी जड़ हैं फिर इन से जीव मुक्ति कैसे पासक्ता है इन बातों के सुनते ही झट मेरा मन महन्त की बातों में लग गया कहा कि हे साहब ? मालिक में मिलाओ । उन्हों ने कहा ॥

गुरु से कर स्नेह यहि भांती। ज्यों चातिक जल स्वाती ॥

अर्थात् सतगुरु करो । मैंने कहा सतगुरु कहां मिलैंगे इतने में एक साधक एकूनामक बोला कि इन्हीं को सतगुरु करो बड़े सिद्ध महात्मा हैं मैं महन्त से बोला कि आप ही सत गुरु होकर उपदेश करो ।

(महन्त) हम ब्राह्मण को डरते हैं कंठी नहीं देते मैंने कहा कि दगाबाज़ नहीं हो जब तक कोई इस मत को ठीक२ खंडन न करेगा और मैं परख न लूंगा तब तक दूसरा मत अंगीकार नहीं करूंगा और जब मालिक से मिला देओगे तो क्या परमेश्वर होने पर भी दुर्बुद्धि बनी ही रहेगी ॥

महन्त—कहा हां ! अगर कोई इस मत का खंडन करेगा तो हम और तुम साथ ही उस मत को ग्रहण करेंगे तब खाखी की कठमनियां उतार महंत के सामने रख दिया तब जल मंगाय मेरे से चरणामृत उतरवाया और साहब बंदगी शब्द बोलाय गले में वही कठमनियां पहिनाय भृकुटी यानी भौंह के ऊपर आठ अंगुल पर भौंह से नांपि के कहा कि इसी जगह तिल भर में सुरति राखो या टोपी के नोक पर वहां आ आरेवां के तरह झीनी शब्द होता है उस में सुरति लगा निर्विकल्प होजावो क्योंकि कबीर के सब ग्रन्थों में लिखा है

अधर दुलैचा पीलका अधरै सुमिरन होय ।
काया के बाहर बसै पुरुष कहावै सोय ॥
षट आकाश के बाहर जोजन आठ प्रमान ॥

यानी आठ अंगुल का नाम आठ योजन रक्खा है शिर पर तब उसी जगह सुरति निरति यानी मन लगा निशदिन ध्यान करता रहा लेकिन जीव शब्द में न मिला तब गुरु को जीव शब्दरूप नहीं होता उन्होंने कहा चिलम को लंगोट तथा टोपी दे कहीं एकान्त स्थलमें बैठि क्षमा साधन करो तो शब्दरूप होजावोगे । सुरतिशब्द संवाद ग्रन्थ में लिखा है—

देह गेह षटमार्ग ब्रह्मकर्म सब छोड़ दे ॥
रहोशब्दकीआस सुरतिनिरति जग मिलरहै ॥
कहां जावगे जो तुम तब सुधि रहै न देह ॥

पांच तत्त्व गुण तीन नहिं ऐसो शब्द विदेह ॥
दयाज्ञान औमुक्ति जो सत्यपुरुष जेहि नांव ॥
यह सब तुम ही होहुगे जबै लखो वह ठांव ॥

इतने में मेरा भाई घर पकड़ लेगया वहां जाय गोशेन-शीनी याने एकान्त रहने का विचार करने लगे और माता पितासम्बन्धी जन काले सर्प के समान निश्चय होने लगे क्योंकि महन्तने प्रथम कहा था कि कुटुम्ब परिवार और सब जहान शीघ्र ही परमात्मा हो जावे इसी कारण विरक्त हो जनेऊ उतार घरसे एक मीलपर गुफा बना उसी रीति से सुरति नि-रति रखने लगे अढ़ाई तीन साल उस में रहिदे खा कि जीव शब्द रूप में मिल परमात्मा न हुआ—इतने में राजा रणवि-जय बहादुर सिंह ताकिल अमरगढ़ और उन का गुरू बलिरा-मपति कि महन्तजी मौसूफ के गुरुभाई थे—कहने लगे कि शब्द रूप परमात्मा नहीं किन्तु शब्द जड़ आकाश का गुण है इस में जीव चैतन्य शब्द का जानने वाला सत्य है। इतने में ज-वाहिरपति नामक दीवान अहंकारके घोड़े पर चढ़ा फिरता था उसने बलिराम आदि से कहा कि तुम लोग कैसे शब्दरूप परमात्मा का खण्डन करते हो उन्होंने ने कहा कि शब्द आ-काश का गुण जड़ है क्योंकि कबीरने बीजकादि ग्रन्थों में कहा है कि—

शब्द कहौ तो शब्दौ नांहीं। शब्द होय माया की छांहीं ॥

बिन दुध अधर न होय अवाज़ा । जहाँ लग कहा सुना औरदेख ॥
सो सब है अच्छर का लेखा । अच्छर आवै अच्छर जाई ॥
अक्षर काल सभन को खाई ।

मदनलालने भी नामप्रकाश ग्रन्थ के चौथे भेद में लिखा है—
अक्षर शब्द आदि जो आहीं । ताको वास गुप्त नभ माहीं ॥
रहै अर्ध अर्ध में आवै । बिन गुरु कोई लखि नहिं पावै ॥
सत्य पुरुष वाही को जानो । बीजरूप ताको पहिचानो ॥
पांच तीन उनहीं के अंशा । चारि खानि है ताको वंशा ॥
ब्रह्मादिक उनहीं से भयेऊ । चांद सूर्य तासे निरमयऊ ॥
दश औतार प्रगट सो कीन्हां । जासे सब जग भये अधीना ॥
तीन लोक का सकल पसारा । उही बीज का है विस्तारा ॥
ताको भेद सन्तजन जाना । जेहि कारन जग भये उत्पाना ॥

उत्तर—जब कि शब्दरूप बीज से आठ अंश अर्थात् पांच तत्त्व तीन गुण चार खानि सूकर कूकर सर्पादि चोर दुष्ट वग़ैरह जड़ द्रव्य पदार्थ बन गया सो सब विकारस्वरूप वही बीज हुआ पुनः उसकी उपासना से मुक्ति कैसे मिलेगी क्योंकि वही काल और वही आवागमन में पड़ा और शब्द उपादान से बना जगत् भी शब्दरूप होना चाहिये सो कहीं नहीं दीखता । इस से सब मिथ्या है ।

(जवाहिर) जो मदनने कबीरमत का फैसला किया वो क्या झूठा है ? ॥

बलराम–हां हां महज़ असत्य क्योंकि बड़ी स्तुतिशब्द संवाद में देखो–

जोग माया अति परबल भारी। अगम धार आप सवारी ॥
क्षर अक्षर निःअक्षर तीता। अगम निगम सब में गति कीता ॥

अर्थात् क्षर अक्षर निक्षर जोग माया की रचना दुःख-दाई काल है ॥

जवाहिर–तुम लोग क्या मानते हो।

बलराम–चैतन्यशब्द निःक्षर का जानने वाला जवाहिर क्या शब्द को नहीं जानता ॥

बलराम–नहीं जानता क्योंकि आकाश गुण मायारहित

जवाहर–तो क्या तुम जीव सर्व घटों में अनेक दो या किएक

बलराम–अजी हम चैतन्य एक सूर्य के सदृश अनेक उस की किरण हैं ॥

जवाहिर–क्या सूर्य साकार जड़ के समान तुम निराकार चैतन्य के भी प्रतिबिम्ब निकलना मानते हो जब कि निरा-कार चैतन्य है तो उस से किरनरूपी जीव निकलना असम्भव है क्योंकि निराकार का प्रतिबिम्ब नहीं सिद्ध होसक्ता।

बलराम–अजी तुम कोल्हकबीर परिचय नहीं

जवाहिर–तुम ऐसे गांजा पीने भांग २ भूलने वाले की कर्म कोई साधू कह सकता है इतने में टेटी टहिव सहित एक दूसरे को गाली प्रदान कर अलग २ कजाति बांध जीवों को बहकाने लगे।

अब विचारते जाइये आर्यावर्त्तीय आप्तपुरुषो ! एक गुरु के चेलों में कितनी दुर्मति अविद्या घर कर रही है पहिले ये लोग एक भग्गूनामदास भी मदनपन्थी था उस के चेले ये पश्चात् एक दुल्हम ब्राह्मण उसी पंथ से था उससे कण्ठी बांध चेला हुये भग्गू जीव आत्मा को ही सत्य मानता था दुल्हम शिरके ऊपर शब्दरूप परमेश्वर का उपदेश किया करता था सचहै॥

जहां सुमति तहां सम्पति नाना, जहां कुमति तहां विपति निदाना॥

ये सब बातें गुफा ही में इस मत के बैरागियों ने कहा मैं इन बातों के सुनते ही गुफा से निकल, चाहा कि सत्याऽसत्य सृष्टयुत्पत्ति, मुक्ति आदि की व्यवस्था ठीक २ जांचों प्रथम महन्त से पूछा कि सृष्ट्युत्पत्ति कहिये॥

महन्थ—सुनो अनुराग सागरादि ग्रन्थों में है—

तब की बात सुनो धर्मदासा। जब नहिं महि पाताल आकाशा॥
गुप्त रहा तब पुरुष के मांहीं। जिमि वट बीज मध्य तरु छांहीं॥
छन्द—वेद चारौ नाहिं जानत सत्य पुरुष कहानियां।
वेद को तब मूल नाहीं अक्षय कथा बखानियां॥
सोरठा—निराकार ते वेद आदि भेद जाने नहीं॥
पण्डित करैं उछेद मते वेद के जग चलै॥

उत्तर—शब्दरूप पुरुष से बना हुआ जगत् भी पुरुषरूप होना चाहिये क्योंकि कारण कार्य समान हुआ करता है जैसे सोना से जेवर पृथ्वी से घड़ा उन्हीं के रंग रहता है और जब

पुरुषही सारे जगत् बनगया तो दुष्ट चोररोग शोक शूकर कूकर वही हुआ पुनः निर्विकार कैसे मानोगे कबीरके ग्रन्थोंमें लिखाहै॥

सब साहेबसे होय सब साहेब का रूपहै ॥

और वेद चारो नाहिं जानत ॥

यह कहना मूर्खता है क्योंकि वेद तो सब सत्य विद्याओं का भण्डार है और परमात्मा का ज्ञान है क्या ईश्वर का ज्ञान ईश्वर को नहीं जानता और सुनो—

पुरुष कला धरि बैठे जबही। अग्र वासना प्रगटी तबही ॥
सहस अठासी द्वीप रचि राखा। पुरुष इच्छा ते सब अभिलाषा॥
सबै द्वीप अग्र रहु ताई। अग्र वासना अधिक सुहाई ॥
प्रथम शब्द पुरुष प्रकाशा। लोकद्वीप रचि कीन निवासा।

दूसरे शब्द से कूर्मज्ञान विवेक निरंजन सहज संतोष स. भाव आनन्द क्षमा निःकाम जलरङ्गी अचिन्त धीरज दीनदयाल जोगजीत सुतन अकार ये सोलह सुत एक ही नाल से शब्दरूप पुरुष से उत्पन्न हुए शब्द का ही लोक द्वीप सब के वास्ते बना उन लोकों में सब सुत पुरुष का ध्यान करते सदा सुख बसन्त भोगते हैं वहां शोक मोह दुःख नहीं सत्यपुर आनन्दधाम वही है इसी आनन्द में बहुत दिन बीता पश्चात् निरंजन एक पग से ठाढ़े चौसठ युग पुरुष की सेवा लाया तब तब पुरुषों से भमानी बोली क्या हठ तुम ठानी है ॥

निरंजन बोले—ठौर देहु तहां बैठो आय।
पुरुष बोले—मानसरोवर में रहो जाय ॥

सब निरंजन मानसरोवर गया पुनः एक पग ठाढ़ हो सेवा किया ॥

तब पुरुष बोले कि सहज तुम धर्म के पास जावो अब क्यों सेवा लाया सहज निरंजन से जाय बोला भाई पुरुष तुम्हारी सेवा मान लिया अब क्यों ध्यान किया ॥

निरंजन बोला कि—पुरुष से जाय कह दे कि यह जगह अच्छी नहीं अब मुझे ठकुराई बक्स देहिं सब लोकका सर्दार मुझे करें नहीं तो कोई न्यारा लोक देवैं तब सहज पुरुष से जाय कहा ॥

पुरुष बोले—तैं निरंजन से खुशी हूं जावो कहो सृष्टि बनावै सहज निरंजन से जाय कहा कि सृष्टि बनावो पुरुष तुझे दिया दिया निरंजन सहज से कहा कि बिना सामिग्री सृष्टि कैसे बनावं ॥

पुरुष बोले कि—निरंजन से कहो कि कूर्म के उदर में सब साज हैं सांगि लेवें सहज जाय धर्मसे कहा और निरंजन जाय कूर्म से लड़ उदर फाड़ डारा उदर से अपार पवन निकला तीनो अग्नि पञ्च सूर्य्य आकाश पृथ्वी मत्स्य कच्छप शेष ब्रह्मा तारागण वगैरः कूर्म के उदर से निकला शेष के शिर पर पृथ्वी दे फिर कूर्म ध्यान किया पुरुष निरंजन से बोले वाह जी ! बड़ों की यह रीति नहीं जो तुम ने कूर्म का पेट फाड़ा तब कूर्म खुशी हुये पुनः निरंजन अनेक जग ध्यान किया कि हाय

! शरीरों को कैसे बनाऊं तब सहज से कहा पुरुष से कहो सहज पुरुष से कहा ॥

पुरुष बोले कि—सब राजधर्म को दिया सहज निरंजन से कहा कि पुरुष सबराज तुम को दिया ॥

निरंजन बोले कि शरीर कैसे रचूं पुरुष से कहो कि बीज देवें सहज पुरुष से कहा वह इच्छा से एक कन्या बनाया कन्या नेपूछा क्या आज्ञा है पुरुष कहा पुत्री पुत्र पास जाओ मिल सृष्टि बनाओ जीव बीज सो हमें दिया मेरा अंश है तब का-मिनी मानसरोवर गई निरंजन देख इतराना ॥

कला देखि निरखै लगा निरखत ही [illegible] हुआ ।
अंग अंग देखि पकड़ि लती लिया ॥

कन्या पुरुष का ध्यान किया कि काल निरंजन मुझे लील लिया है तब पुरुष को दया आई कसम खाई कि निरंजन को मेंटि डारौं फिर शोचा कि एक सुत कों मेटों तो सब सुतों का नाश हो जायगा पुनः पुरुष नाराज़ हुै जोगजीत से कहा कि जाओ निरंजन को मारि निकारौ मानसरोवर में रहने न पावै और न यहां आने पावे नारी उस के पेट में से कहो पेट फाड़ि बाहर आवै जिस से कूर्म के उदर फाड़ने का फल नि-रंजन पावै और निरंजन से कहो कि यह तुम्हारी स्त्री है तब जोगजीत मानसरोवर गया उसे देखि निरंजन उस जोग जीत से पूछा कि भाई किस लिये आने हो कप

ने कहा कि अरे धर्म तुम नारी को लील लिया मैं पुरुष की आज्ञानुसार तुम्हे यहां से मारि निकालूंगा नारी से कहा कि उदर फाड़ि बाहर आवो यह कह जोगजीत ध्यान किया तब नारी पेट से बाहर निकल पड़ी निरंजन को देख बहुत डरी बोली मैं कौन तरह से यहां आई। पुनः लजाय डराय निरंजन को माया डारा निरंजन ने कहा कि अरे नारी सुकुमारी हमें काहे डरी पुरुष तुझे मेरे लिये रचा है मिल के सृष्टि रचें॥

कन्या बोली तुम मेरे ज्येष्ठ भ्राता हो ऐसा मत बको अब जब से उदर में डारा तब से कन्या सम तुल्य तुम्हारी हो गई और जेठ भाई हो॥

निरंजन कहा—पाप पुण्य के हम हैं कर्त्ता।

पाप पुण्य से हम नहिं डरता॥

हमारा लेखा कोई न लेगा।

तब दूनों एक मत हुए॥

नारी विहंस सम्भोग चाहा।

पहिले कन्या के भग बनाना कबीर का परमेश्वर भूल गया था निरंजन नख से फाड़ि भग रचा शोणित बहा वस्त्र से भई तब भाई बहिन मिल भोग किया तीन विन्दु डारा तब तीन लड़का ब्रह्मा विष्णु महेश जन्म लिये॥

पुनः माता तीनों लड़कों को समुद्र मथन करने भेजा आप स्त्री बनि समुद्र में प्रथम ही बैठी थी समुद्र मथि तीनों तीन स्त्री लाये माता को दिखलाया माता सम्भोग की आज्ञा

दिया दूसरा बार समुद्र मथने भेजा तब ब्रह्मा ने चार वेद पाये महादेव ने विष विष्णु ने तेज पाये यही स्त्री गुरू है ब्रह्मादिकको जोगध्यान लखापीत श्वेत आदि रंगको परमेश्वर कह दृढाया ॥

छन्द—प्रथम अंडज रच्यो जननी चतुर्मुख पिंडज किये ।
विष्णु उखमज रच्यो तबही रुद्र स्थावर किये ॥

इसी भांति चारो मिल जीवन को बन्धन दिये आद्या अपनी तन की मैल से गायत्री नामी पुत्री रचा गायत्री ब्रह्मा से सम्भोग करा झूठी साक्षी देने के लिये अपनी देह के मैल से सावित्री नामी पुत्री रचा पुनः तीनों आद्या के समीप झूठी बोले तो आप पाया ॥

(समीक्षक) क्या जी ! महंत यह किस्सा गपोड़ा नूरना में से बढ़ के असत्य है या नहीं ? कि इन संस्कृत शास्त्रों के आशय से अनभिज्ञ कबीर ने सर्व ग्रन्थों में भूस मारा है देखो ! इस सृष्टि का रचने वाला पुरुष अज्ञानी था ! सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक इन जुलाहे जी का परमेश्वर ही क्या न था ऐसे ही विचार शून्य मनुष्यों ने क्रोड़ों जीवों को दुःखसागर में डुबा मारा भला प्रथम सूर्य्य चन्द्रमा नहीं थे तो दिन बहुत कैसे बन सक्ता है और कूर्म जब देहधारी था तो उस के पेट में आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी नाना लोक कैसे रह सक्ते हैं क्योंकि उदर में इतना अवकाश ही नहीं बन सक्ता और जब पेट से नहीं पृथिव्यादि निकाला था तो उस समयये मुख इन्द्रिय वाले जीव कहां रहते थे। क्योंकि पुरुष

तो बहुत बार बात चीत पुत्रों से करता मार पीट को भेजा करता था और जब कूर्म के उदर से जगत् निकला तो पहिले निरंजन किस पर खड़ा रहके ६४ जुग ध्यान करता रहा पृथ्वी तो थी नहीं सायद ऐसी मिथ्या सृष्टि कहने वाले की छाती पर खड़ा रहा होगा परन्तु यह महात्मा कहां रहा होगा और जब की शब्दरूप पुरुष के राज में निरंजन ने अखवा वा गड़-बड़ कर पेट फाड़ा बहिन को लीलिगया इनका परमेश्वर बड़ा अन्यायी कमजोर था कि निरंजन को दण्ड करे बिना छोड़ि दिया ऐसे को परमात्मा मानने वाले कभी मुक्ति नहीं पा सक्ते और शब्दरूप पुरुष और शब्द ही रूप १६ सुत और श-ब्दोंका ही लोक रहने का है तो शब्द में सोलह सुत या पुरुष लोक कैसे भिन्न २ गिने जा सक्ते हैं? मिथ्या गपोड़ा जिस का न ठौर न ठिकना भीतर बाहर की फूटी आंखे वाले व्यर्थ इस को मान मनुष्य जन्म गमांये हैं वा गमाते हैं गमावेंगे। कबीर के बहुत ग्रन्थों में लिखा है कि कबीर का जन्म इच्छा से हुआ ये कलंक छिपाने की बात है और जुग २ जगमें आया ये लुभाने के वास्ते मिथ्या लिखा है कलियुग में नीरू के ता-रने को चार मरतवे आया वही नीरू चौथे जन्म में धर्मदास हुआ उसे कबीर अमरलोक लेगया धर्मदास की औरत को नेत्र से नेत्र मिला चूड़ामणि वंश जन्माया पांच महीने की बछिया नजर से देख उसका दूध दुहाया पिया बादन कसनी शेखत की को दिखाया समुद्र के समीप जगन्नाथ का मन्दिर थपाया

बाल्हक गरुड़ ब्रह्मादि से बहस कर हराया ॥

यह महा झूठ मूर्खों को बहका चेला कर लेने के वास्ते बकमारा न स्वार्थी लोग पकना स्वार्थ सिद्ध तरने में अधर्म को भी धर्म मान लेते हैं और न वेद समुद्र से निकला न ब्रह्म बहिन माता संग घाटि किया न मैल से गायत्री सावित्री बनी क्योंकि गायत्री सावित्री नाम छन्द वेद मन्त्र का है न चारि शक्स चारि खानि रचा किन्तु परमात्मा ने अपने सामर्थ्य से रचा है। ये बातें वेदभाष्यादि में ऐसी नहीं है ॥

पुनः बलरामपतिने गुरू दीवान रणविजयबहादुरसिंह से प्रश्न किया कि सृष्ट्युत्पत्ति मुक्ति को हाल क्या है ॥

उसने उत्तर दिया कि साहब, साहबसे पुरुष, पुरुषसे इच्छा, इच्छा से ज्योति, ज्योतिसे, महातत्त्व, महातत्त्व से अहंकार, अहंकारसे आद्या, आद्यासे ओ३म्कार, ओ३म्कारसे ओहं, ओहं से सोहं, सोहंसे तोय, तोयसे कमल, कमलसे ब्रह्मा, ब्रह्मासे मारीच, मारीचसे कश्यप, कश्यप से देवता दैत्य राक्षसादि उत्पन्न हुये

समीक्षक—यह सृष्टिक्रम किस ग्रन्थ में लिखा है।

बलरा०—किसी ग्रन्थ में नहीं ॥

उत्तर—फिर आप कहां से जाना।

बलरा०—अपने दिल से ॥

उ०—क्या तुम्हारा दिल सर्वज्ञ तो नहीं है क्योंकि पांचवें वर्ष के पहिले दिन एक घंटा दिन चढ़े तुम क्या २ कल्पना

काम किया था कहो इतने में चुप रहगया पुनः पूंछा कि साहब से जीव की उत्पत्ति तुम मानते हो तो उस की प्रलय भी मानलो क्योंकि उपजी वस्तु अवश्य नाश होती है आद्या से ओ३म् की उत्पत्ति असत्य क्यों कहते हो ओ३म् नाम चैतन्य सर्व व्यापक होने से परमात्मा का सत्य शास्त्रों में वर्णन है कमल से मनुष्यरूप ब्रह्मा की उत्पत्ति कहना सृष्टि क्रम से विरुद्ध है परमेश्वर के नियम से विरुद्ध कभी कोई वस्तु नहीं बन सक्ता तुम भी अविद्यावानों का ढंग देख एक प्रकार की सृष्टि कथन कर कबीरपंथ के विरुद्ध पथ चलाना चाहते हो लेकिन इस समय आर्यावर्त्तीय लोग विद्यावान् होते हैं यह छल कपट यहां में चलेगा साहेब शब्द यवन का है यह सृष्टि थोड़ा नवीन वेदान्ती थोड़ा थोड़ा वैष्णव और शाक्तकी जोड़ लिया है जैसे:—

"कहींकी ईंट कहीं का रोड़ा,
भानमती ने कुनवा जोड़ा" ॥ मुक्ति कहो क्या है ?

बलरा०—पारखी चैतन्य अपने रूप को परख आप मुक्त होता है ॥

उत्तर—जीव सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् तो नहीं है ॥ क्या कोई आप अपने कंधे पर चढ़ नदी उतर सक्ता है ॥

बलरा०— अजी जीव ही स्वतः सिद्ध है पूरनदास दक्खिन बुरहारपूर में हुये बीजक का टीका रचा है उस में साफ़ २

लिखा है कि जीव की भूल से जगत् ब्रह्म सब बना। आओ देखो ये बातें मिर्ज़ापुर में हुईं वहां से बुरहानपूर जा कर बत्तीस रुपया दे टीका मोल लिया उसे दिनरात बांचता गौर करता बम्बई पूना के तरफ़ महन्तों के मकान पर जाय २ पूरन लालबुझक्कड़ भोंदू की बातें अप्रमाण वेदविरोधी वंशवालों से यह शाखा फूटी है सभा किया करता था इन पंथवालों को इसी प्रकार मैं देखा मुताबिक श्लोक मनुजी महाराज के॥

पाखण्डिनोविकर्मस्थान्वैडालव्रतिकान्शठान्।
हैतुकान्वकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत्॥

पाखण्डी अर्थात् वेदनिन्दक वेदविरुद्ध आचरण करने हारे (विकर्मस्थ) जो वेदविरुद्ध कर्म का कर्ता मिथ्याभाषणादि युक्त जैसे विडाल छिप और स्थिर रहकर ताकता २ झपट से मूषे आदि प्राणियों को मार अपना पेट भरता है वैसे जनों का नाम व्रतिक (शठ) अर्थात् हठी दुराग्रही अभिमानी आप जानें नहीं औरों का कहा मानें नहीं (हेतुक) कुतर्की व्यर्थ बकने वाले जैसे कि आज कल के वेदान्ती बकते हैं हम ब्रह्म जगत् मिथ्या स्वप्नवत् भूल से उत्पन्न हुआ है वेदादि शास्त्र और ईश्वर भी कल्पित है इत्यादि गपोड़े हांकने वाले (बकवृत्ति) जैसे बक एक पैर उठा ध्यानावस्थित के समान हो कर झट मच्छी के प्राण हरके अपना स्वार्थ सिद्ध करता है वैसे

आज कल के वैरागी और साखी कबीरपंथी आदि हठी दुराग्रही वेदविरोधी हैं ऐसों का सत्कार वाणीमात्र से भी न करना चाहिये क्योंकि इन का सत्कार करने से ये वृद्धि को पाकर संसार को अधर्मयुक्त करते हैं आप तो डूबे ही हैं परन्तु साथ में सेवकों को भी अविद्या धोखारूपी महासागर में डुबा देते हैं अब खुलासा हाल पूरनकृत टीका पहिली साखी का सत्य न्याय ग्राहकों के सामने निवेदन करता हूं जोकि यह ढपोलशंखने नशाकी झोंक में बकभारा है कि बहुत मूर्ख मान भकुवानाथ बने फिरते हैं ॥

प्रथम साखी

जहिया जन्म मुक्ता हता तहिया हता न कोय ।
छठी तुम्हारी हों जगा तू कहां चला विगोय ॥

टीका—जब पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश आदि त्रिगुण अवस्था प्रकृति और स्त्री आदि चारिखानी और दूसरा मनुष्य जाति भी कोई न था तब ये जीव आप मुक्त था कौन प्रकार से ये शंका तो दूसरा विजातीय बंधन कुछ था ही नहीं तब मुक्त सहज में ही था ये अभिप्राय जो बन्धन मूल में कैसे पैदा भया और पांचतत्त्व न थे तब ये जीव कहां था ये शंका तो जब पृथ्वी न थी तब पांचतत्त्व था और जल न था तब विचाररूपी जल था और अग्नि न था और जल न था तब विचाररूपी जल था और अग्नि न था तब शील रूपी

अग्नि था वायु न था तब दया का प्रचार था आकाश न था तब याही पांच जीव के अनादि तत्व याही को ब्रह्माण्ड और याही तत्वन की देह हंसा की थी पक्के तत्वन के आधार से पक्का देह जीव का था तामें एक और रूप एक दूसरा भाव कुछ न था जीव आप ही स्वतः सिद्ध याको करता दूसरा कोई नहीं ये निश्चय है संतो सोई तुम्हारी छठी देह ताको छोड़ि के तू पंच देहन के हिंडोले में बैठे ये अभिप्राय तो कौन प्रकार से पांच देह पैदा भई और प्रकार से छठी देह छूटी और कौन प्रकार जीव हिंडोले में परा ॥

ये शंका-तो छठई देह में जब हंसा था तब बहुत चैन में खुशीथा सो एक समय हंसा ने अपनी देह अपना ब्रह्मांड देखिये परमहर्षायमान हुवा तब इन्द्रिय गोलक और इन्द्रियन के विषय थे या नहीं ये शंका तो न कच्चे इन्द्रिय गोलक न कच्चे इन्द्रियन का व्यवहारथा तो कैसे थे और कैसे देखा सो सुनो विचाररूपीनेत्र और शील को प्रकाश सत्य सोई भास सो विचार रूपी नेत्रन से देखा ये अभिप्राय ।

अब छठी देह प्रथम वर्णन करता हूं सो सुनोः-

साज की प्रकृति निरनय नाड़ी निविन्द निर्मल मांस प्रकाश त्वचा स्थिर हाड़ क्षमा रोम विचार की अस्ति नास्ति पद बिल गाना सोई पसीना शुद्ध सोई विन्दु हेतु सोई रक्त अमल सोई रार निर्मल सोई मूत्र शील की प्रकृति अक्षुधा अतृषा निर्गुण निरालिन आनन्द[illegible] प्रकृति अमल अचल

सन्दर्भ पुस्तकालय
पु. परिग्रहण क्रमांक 4840 ...
दयानन्द महिला म[illegible] ...त्र

अवसर असंकोच धीरज की प्रकृति अकाम अक्रोध निर्लोभ निर्मोह निर्भय ये पांच की पचीस प्रकृति। अब दश इन्द्रिय सुनो—शील की इन्द्रिय नेत्र पांव धीरज की इन्द्रिय कान धाणी साच की इन्द्रिय गुदा नाक दया की इन्द्रिय त्वचा हाथ विचार की इन्द्रिय लिंग जीभ ये दश इन्द्रिय। अब तीन गुण सुनो—विवेक वैराग गुरु भक्ति ये प्रकार की तेरी छठी देह सो ताही देह को हंसा ने देखा और सुखी हुआ सोई अहङ्कार जागा जो सर्वोत्कृष्ट आनन्द तहां हंसा की तत्त्वप्रकृति आनन्द में लय होगई और देह की विस्मृति सुषुप्तिवत् भई सो हंसदेह छूटी और कैवल्य देह हंसा को प्राप्त भई तहां अभाव भूमिका विज्ञान जल ब्रह्माग्नि अग्नि निरांत वात निजाकाश आकाश तत्त्वमस्यादि गुण और प्रकृतीलति प्रकृति तहां हंसा कुछ काल रहे फिर चैतन्य स्फूर्ति भई सो कैवल्य देह हंसा की छूटी जाको सब आत्मा अधिष्ठान ब्रह्म बोलते हैं फिर हंसा को महाकारण देह प्राप्त भई तहां सुलीन भूमिका जानी व ज्वाल प्रकाशाग्नि वड़वाग्नि चिन्मय वात चिदाकाश आकाश तुरीया अवस्था साक्षी बोध ज्ञानये त्रिगुण सकल सम्पत्ति सहित प्राप्ति भई फिर तहां ते प्रत्यगात्मा अभिमान से से प्राज्ञ अभिमान उत्पन्न हुआ तब सुषुप्ति अवस्था प्राप्त भई तहां सो प्रेष्टता भूमिका आनन्द जल मन्दाग्नि स्थिर पवन महदाकाश आकाश अज्ञ जाए मूढ़ ये त्रिगुण तहां हंसा कुछ काल रहे फिर प्राज्ञ अभिमान में तैजस उपजा

तहां हंस को लिङ्ग देह प्राप्त भई तहां स्वप्न अवस्था गतागत भूमिका चञ्चल जल कामाग्नि गुलफ वायु मठाकाश आकाश रेचक पूरक कुंभक ये त्रिगुण ये प्रकार का लिङ्ग देह तहां ते तैजस अभिमान से विश्व अभिमान पैदा हुआ सोई स्थूल देह हंसा को प्राप्त भई जाग्रति अवस्था क्षीप्रा भूमिका काम जल जठराग्नि श्वास वायु सुन्न घटाकाश रज सत तम ये त्रिगुण दश इन्द्रियादि व्यवहार गोलक विषय सब पैदा भये और हंसको स्मृति आई अहंकार खड़ा हुवा तब पांचपंचक पैदा भये अन्तःकरण चित्त मन बुद्धि अहंकार आकाश पंचक अर्द्धसुन्न ऊर्ध्वसुन्न मध्य सुन्न सर्वसुन्न महा सुन्नवायुपञ्चक प्राण अपान समान व्यान उदान अग्निपञ्चक कान नाक आंखि जीभ त्वचा जलपञ्चक शब्द रूप स्पर्श रूप रस गन्ध पृथिवीपञ्च हाथ पांव मुख गुदा लिङ्ग ये पञ्च पञ्चक निर्माण भये और पचीस प्रकृति निर्माण भई हंसका पक्का देह जाय के कच्चा हुवा और पक्का ब्रह्मांड जायके कच्चा ब्रह्मांड हुवा धीरज आकाश दया वायु शीलते तेज विचार सोई जल सत्त सोई पृथिवी गुण प्रकृति सोई प्रकृति ये प्रकार तेरी छठी देह से अहंकार आनन्द जागा ताते एक्के का कच्चा होगया तब अहंकार आया और इच्छा किया ताले नारी इत्यादि चौरासी योगिनी पैदा भई और सब में आप समाया फिर कल्पित दूसरा कर्ता खड़ा किया और कल्पि २ नाना वाणी वेदशास्त्र पुराण श्रुति स्मृति छन्द प्रबन्ध मन्त्र तन्त्र यन्त्र बनाया और इन के पीछे तू कहां चला विगोय

हे गुरू बिगाने का अधिष्ठान छठी देह सो सब भास अध्या-
स कोहिके जो मैं छठी भूमिका पर ठहरा तो फिर यही द-
शा को प्राप्त हूंगा क्योंकि जब कुछ न था और जीव स्वतन्त्र
मुक्त था तो उसे क्या खुशी थी कि मेरी पक्की देह जाय और
कच्ची देह होवै अरु ऐसी दरिद्र दशा होवै ये कुछ उस को
इच्छा न होके ये दशा प्राप्त भई तो अब वह दशा देह को
प्राप्त भया और फिर ऐसी दशा न होगी याको प्रमाण क्या ?
ये सम्पूर्ण कच्चा मसाला पांच देह सहित छठी
देहमें था अगर न होता तो कहांसे निकलता ये शङ्का तो छठी
देह तो हो भाव और सब विकार का मूल ठहरा और तेरा
छठा देह कहां है और पांच देह कहां है तू परख के यथार्थ
देख तो । हे गुरू मेरेको अब तो पक्का देह आदि चारो देह
कच्चे स्थूल देह में मालूम होते हैं तो हे सन्तो ! तुम विचार
करो प्रथम मैं स्थूल आदि पांचो देह एक पक्के देह में था और
अब पक्का आदि पांच देह स्थूल में है तो सोही पक्का कच्चा हो
गया अब पक्का क्या कहीं न्यारा बैठाहै नाहक मिथ्या कल्पना
काहेको करताहै ये पांच देह तेरेको परखायके छुड़ानेके वास्ते
छठी देह सिद्ध किया सो तू छवों देह परख के पारख भूमिका
पर ठहर पारखीको न पक्कीसे काम ना कच्ची से काम जो
छवों भूमिका परखै सो पारखी ताका स्वरूप पारख तो पारखी
पारखरूप एक पारखजीव की भूमिकाहै और सब नास्ति धोखा
पारखमें कच्ची पक्की कुछ सम्भवती नहीं जब कच्ची नास्तितब

पक्की भी नाहि। जब लग पक्की तब लग कच्ची जबलग कच्ची तबलग पक्की की रहनी लेना और पक्की कच्ची से कुछ काम नहीं यथार्थ पारख पर स्थिर होना चाहिये ये अर्थ ॥

समीक्षक—भला ! यह सृष्टि विधान किस ग्रन्थ प्रमाणसेहै।

(उत्तर) नास्तिक—किसी ग्रन्थ प्रमाणसे नहीं कबीर मत वा किसी मत पुस्तक में नहीं है ॥

आस्तिक—तो फिर कहां से लाकर लिखा ॥

नास्तिक—अपने दिल से ॥

आस्तिक—तो अप्रमाण होवे से झूंठा है ॥

नास्तिक—पूरण ख़ास कबीर थे वे सब जानते थे जैसे सृष्टि आदि में हुई थी ॥

आस्तिक-जब कि कबीर सातसौ वर्ष हुआ देह धारण कर धर्मदास के उपदेशमें बहुतसे ग्रन्थ भाषण किया है उन ग्रन्थों में कहीं नहीं इसभांति सृष्टयुत्पत्ति मुक्तिविधान कहाहै इस विधि सृष्टयुत्पत्ति मुक्ति माननेसे आगेके सब पुस्तक सृष्टयुत्पत्ति व्यर्थ और झूंठे होतेहैं तो क्या जो कबीर अब जन्म ले तबकी अपनी बातें अब आपही झूंठ किया तो मिथ्यावादी हुआ वा वा नहीं ? और उसकी आगेकी बातें मानने वाले धर्मदासादि आजतक सब महन्त कबीरपंथी नरकमें बान्धे गये वा नहीं ? क्योंकि इससे और आगे की बातोंसे महाविरुद्ध पड़ताहै तोभी इसकी भी क्रिया कल्पना वें खण्डन करता हूं सुनो—

जहिया जन्म मुक्ता हता तहिया हता न कोय ।
छठी तुम्हारी हौं जगा तू कहं चला विगोय ॥

अर्थात् जब जीव जन्मरहित देह नहीं धारण किया था तब मुक्तथा और अब छठी यानी छवों काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, तृष्णा में हो यानी अहंकारी बने क्यों ख़राब हो रहेहो ऐसा अर्थ युक्ति प्रमाण से शुद्ध ठीक होता है और जो मूर्ख ने लिखा कि जब जीव जन्मसे रहित था तब पक्की अनादि तत्त्व ५ प्रकृति २५ इन्द्रिय १० गुण ३ इतनी सम्पत्ति वाली देह में था और उस साखी के अर्थ से सिद्ध होता है कि " तहिया हता न कोय ,, अर्थात् जब कुछ न था तो इस साखीका अर्थ व्यर्थ क्यों किया शायद नशा की लहरमें बकमारा हो तो कुछ आश्चर्य नहीं और दया क्षमा सत्य धैर्य विचार यह छठी देह की तत्व लिखा भला यह तो स्वभाविक गुण जीवका सत्य शास्त्रों में वर्णन है इन को तत्त्व क्यों कहा गुणभी कभी तत्व हो सक्ता है और जिसे पक्की अनादि तत्व प्रकृति कहा उसे फिर प्रलय हो कच्ची हो जाना कहा । भला पक्की अनादि भी कभी प्रलय हो सक्ती है ये छोकड़े पनका मिथ्या प्रलाप है और दया क्षमा आदि की २५ प्रकृति भी लिखा इस का कहीं प्रमाण ही नहीं जिसका दया, क्षमा, सत्य, धीरता विचार वो समुद्र लाखों जीव भारत वर्ष में हैं भला धीरज को आकाश, दया को वायु, शील को अग्नि, विचार को सत्य, सत

जो पृथ्वी, बनावै देखो बनता है अगर अब बनै तो तब भी बना है जो अब न बनै तो तब भी नहीं बना और वह झूठी देह की तत्त्व प्रकृति जड़ थीं या चैतन्य अगर जड़ तत्त्व प्रकृति इन्द्रिय आदि थी तो जरूर जड़ों के संयोग से जन्म मरण रोगादि क्लेश भोक्ता रहा होगा क्योंकि नीचे कहा है कि सब अहङ्कार विकार का मूल झूठी देह है तो फिर झूठी देह में भी बन्धा सदोष था एक बात झूठी होने से सब झूठी होती हैं इस ने तो असत्य ही की जहाज खड़ी की है और अगर जीव को सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् कहो तो भूलना न चाहिये और जो भूलगया तो ऐसा आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी सूर्य चन्द्र आदि नाना लोक उत्पत्ति पालन धारण गुण नियम सहित अल्पज्ञ असामर्थ्य जीव कभी नहीं कर सकता और पहिले लिखा कि हंसा पक्षी देह में सदा खुशी था और फिर लिखा कि एक समय देह देखि हर्षित हुआ सदा खुशी था कहिके एक समय देख खुशी हुआ कहना इस से यह बात सिद्ध होती है कि सदा हंसा झूठी देह में अन्धा और दुःखी था और ब्रह्म परमात्मा सर्वेश्वरको भी मिथ्या पैदा होना लिखा क्योंकि सर्वज्ञ चैतन्य अमर अजर अनन्त अनादि अखण्ड विशेषणोंके साथ वेदोंमें परमेश्वर प्रतिपादित है वह न शब्द न ज्योति न आकाशादिके स्वरूप का है क्योंकि यह सब रचना परमाणुसे पर

रमेश्वर ने बनाया है और जब पक्षी तत्व की प्रकृत निर्मोह निरालस्य अनिद्रा आदि थी तो फिर हंसा को निद्रा मोह क्यों हुआ अगर हुआ तो निरालस्यादि प्रकृति व्यर्थ हैं और जीव की भूल से एक मच्छड़ तो बन ही नहीं सक्ता तो परमात्मा भूल से बना यह कहना अविद्वान् शैतान का काम है और विवेक वैराग गुरु भक्ति जो पक्षी देह में गुण था तो पक्षी देह देख राग अविवेक क्यों हुआ और तब पक्षी देह में एक ही जीव स्वतः कहा अब तो अनन्त घटों में अनन्त जीव बधे दीख पड़ रहे हैं तो अनन्त जीव कहां से आये अगर कहोकि वही एक ही जीव भूल चूक वाला छूट ही देह का अनन्त घटों में व्यापक और सनाथ अपने आप अज्ञानी पापी कूकर सूकरादि योनि में बहु दुःखी होरहा है तो फिर थोड़ेसे शरीर अन्तःकरण में पारख होने से थोड़े २ दूर निर्मल अज्ञान रहित हो सर्वत्र अर्थात् जितने २ दूर शरीर अन्तः करण मलीन अज्ञानी शोक रोग बहुसहित करे रहैंगे उतने २ दूर बंधा रहेगा इस से वह हंसा मुक्त शुद्ध अशोक कभी नहीं हो सक्ता है जैसा किसी वस्तु में मैला सर्वत्र लगाकर थोड़ी २ दूर धो डालो तो सर्वत्र मैला मानना ही पड़ेगा एक अङ्ग में फुंसी हो तो सर्व शरीर ही में आग लग जाती है इस दृष्टान्त से एक जीव चैतन्य सब में समाया हुआ मानने वाले कभी मुक्तरूप उस चैतन्य को न पावैंगे इससे इस पन्थ को त्याग वेद मत धारण करें नहीं तो हाथ कुछ न लगेगा अब कि हंसा पक्षी

देह में सुषुप्तिवत् भूल गया था तो उस को लखाया कौन कि तेरी पक्की देह से बिगड़ पांच देह बन गई क्योंकि इस मतमें सिवाय एक भले हंसाके दूसरा बेभूलचूक वाला चैतन्य सिद्धही नहीं हो सक्ता और पारखी पारखरूप एक कहा पुनः कहाकि हंसा पारख पर ठहरा क्या कोई अपने कन्धे पर आप चढ़ समुद्र तर सकता है और जो पारख पर छठी देह में था तो भूला क्यों? अगर नहीं थी पश्चात् हुई तो उससे मुक्ति मिलना व्यर्थ धोखा है छी! छी!! छी!!! इस मुक्ति को और जो कहा कि जब कच्ची नाश होगी तब पक्की भी नाश होगी क्योंकि सो ही पक्की कच्ची होगई वाह २ भला अनाड़ी था कि पक्की अनादि को भी नाश होना कहा इसी तेजी की लिखाई में छः छः महीने पागल लोग दुःख उठाते हैं और चालीस २ रुपया दे मोल लाते हैं परन्तु इस की कसरि धोखा न समझ व्यर्थ मनुष्यजन्म गमाते हैं। थोड़ी सी इस की कपोल कल्पना और सज्जनों के सामने प्रकाश करता हूं॥

प्रथम चौंतीसा पद बीजक का॥

ओ३ङ्कार आदि जो जानैं। लिख के मेटैं ताहि सो मानैं।
ओ३ङ्कार कहैं सब कोई। जिन यह लखा सो विरला होई।

टीका पूरनकृत—जो ओ३ङ्कार जानने वाला सोई ओ३म् की आदि ये अर्थ तो जानने वाला अस्ति और जो जानते हैं आप ओ३म् ब्रह्म सो मानिके जो ओ३म् को लिखे फिर मेट

कारे ताकी को पक्का जीव मानिये ये अर्थ "ओ३म् कहिये पिण्डाण्ड ओ३म् कहिये ब्रह्माण्ड"। केहि तरह से सो सुनो—मस्तक सोई बिन्दु निर्विकार ताको सोई विकार अर्द्ध मात्रा हृदया सोई मकार कुण्डली कण्ठ सोई उकार दृष्टक त्रिकुटी सोई अकार तारक ये प्रकार से पांच मात्रा ओ३म् के जीवों ने अनुमान किया पिंडांड में ये सम्पूर्ण नाशवान् मिथ्या औरजीव सत्य ये स्थूल मात्रा और सूक्ष्म मात्रा पिंड की सुनो—प्रथम जब शुद्ध स्वभाव रहता है तब शब्द बिन्दुरूप स्थान ब्रह्माण्ड ताको निर्विकल्प निरामय ब्रह्म बोलते हैं फिर वहां से स्फूर्त्ति होती है सोई सः विकल्प अर्ध मात्रा ताको अव्यक्त सबल ब्रह्म बोलते हैं तब शब्द नाभि स्थान में विकाररूप रहता है तब चित्त चतुष्टय उदय होता है और चित्त से अनुसन्धान उठता है और बुद्धि निश्चय करती है तब बुद्धि बोधव्य स्वरूप महत् तत्व कहलाती है उसे कोई कूटस्थ कहता है तब शब्दकुण्डली सुक्ष्मरूप मकार होके हृदय में आता है तहां पांच कला निर्माण होती है शब्द स्पर्श रूप रस गंध याको सूक्ष्म देह बनता है और नाना संकल्प विकल्प होता है और फिर त्रिकुटी पर आयके अकाररूप शब्द होता है ऐसा पांच मात्रा मिलके स्थूल "ओ३म्" बनता है भो बैखरी में आय के चौतीस कला धरता है ओ३म् सोई ब्रह्म चौतीस अक्षर सोई माया ओ३म् कारण चौतीस अक्षर कारज जीव कारता ये अर्थ ॥

अब अक्षर की उत्पत्ति सुनो—कण्ठ अक्षर ६ क ख ग घ ङ तालू अक्षर ५ ट ठ ड ढ ण दन्ताली अक्षर ८ च छ ज झ ञ र ल ष ष दांती अक्षर ६ त थ द ध न स मुख अक्षर ३ य ह क्ष ओठ अक्षर ५ प फ ब भ म ये प्रकार से एक सौ चौतीस अक्षर भये तामें पांच मात्रा मिली याते एक २ ते बारह बारह अक्षर भये ये प्रकार से चार सौ आठ अक्षर भये तामें पांच मात्रा मिली सोई जगत् जाल ओ३म् ब्रह्मरूपी खड़ा भया उकार सम्बन्धी मकारसम्बन्धी हकारसम्बन्धी बिन्दुसम्बन्धी ऐसे चारसौ आठ मात्रा भई फिर ठौर २ की मात्रा मिल के नाना वाणी बनी और जो २ कल्पना भीतर थी सो सब लिखी गई तामें तीन लिंग बने स्त्रीलिङ्ग पुरुषलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग हकार युक्त स्त्रीलिङ्ग अकार विन्दुयुक्त पुरुषलिङ्ग उकार मकार नपुंसकलिङ्ग ऐसे तीन लिङ्ग बनाय के फिर नाना प्रकार के अर्थ और मन्त्र बने सब में पांच मात्रा मिली और कामना बढ़ी जगत् की अकार रजोगुण पीत रंग उकार सतोगुण श्वेतरंग मकार तमोगुण रक्तवर्ण हकार शुद्ध सतोगुण सो नील रंग बिन्दु श्याम वरण निर्गुण ब्रह्म आकाश । अब ब्रह्माण्ड का स्वरूप सुनो—पृथ्वी सोई अकार जल सोई उकार अग्नि सोई मकार वायु सोई हकार आकाश सोई विन्दु अकार तारक सोई ब्रह्मा उकार दण्डक सोई विष्णु मकार कुण्डली सोई शिव अर्ध चन्द्र सोई ईश्वर विन्दु सोई ब्रह्म ऐसा समेष्टी वेष्टी सम्पूर्ण पर्यव-

रूप एक आत्मा ओ३म्कार ब्रह्म परमात्मा ऐसा कहै सब कोई और याही में अरुझे परन्तु जिन्ह यह लखा सो बिड़ला होई कि जिन ने यह ओ३म्कार को लखि के त्यागा और पारखी पारख पर थिर हुआ सो बिड़ला कोई सो ओ३म्कार मिथ्या पारखी सच्चा। ये अर्थ ॥

समीक्षक—वाहरे! अविद्यान्धकारबद्ध अविद्याधिराज तुमने ओ३म् के बिंदु रेफ मकार उकार अकार पांच मात्रा कल्पना-कर आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी इत्यादि पांच २ वस्तुओं पर घटा भ्रम का बीज बोया कोई ग्रन्थ का प्रमाण क्यों न दिया क्योंकि ओ३म् तो अ उ म् यह तीन अक्षर समुदाय मिल के है सर्वदासे सर्वमहाऋषि विद्वान् ऐसे ही मानते आये हैं और ओ३म् नाम परमात्मा चैतन्य सर्वनियन्ता जगदीश्वर का वेदादि सत्यशास्त्रों में हर जगह प्रतिपादित है विशेष अर्थ ओ३म् शब्द का सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लास में देख लीजिये न ओ३म्कारण जगत्कार्य न जीव कर्ता है क्योंकि कबीर ने भी अनुराग सागरादि में लिखा है कि:—

आवै जियरा मालिक होता। योनि संकट काहे को सहता॥

सो तुम ने कबीर का वाक्य भी न माना और सत्यशास्त्रों में भी लिखा है—"जीवः प्रति शरीरं भिन्नः परमात्मा विभु-व्यापकः सर्वज्ञो नित्य शुद्धः" अर्थात् जीव अनन्त घटों में अनन्त भिन्न २ इच्छाद्वेष हर्ष शोक पाप पुण्य ज्ञान अज्ञान जन्म

संरथ अवस्थादिक कर्मों को भोक्ता है और परमात्मा इन कर्मों को नहीं भोक्ता न फसता विभु याने सर्वत्र व्यापक सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञत्वादि शुभ गुणों के साथ वर्तरहा है। "ओ३म् खम्ब्रह्म=अवतीत्योम् आकाशमिव व्यापकत्वात्खम् सर्वेभ्यो बृहत्वात् ब्रह्म० चैतन्यरूप रक्षा करने से ओ३म् आकाशवत् सर्वत्र व्यापक होने से खम् और सब से बड़ा सृष्टि कर्त्ता धर्त्ता होने से ब्रह्म परमात्मा का नाम है ओ३म् जिस का नाम है वह कभी उत्पत्ति प्रलय नहीं होता उसी की उपासना करनी योग्य है अन्य की नहीं अभी सत्तर साल इस को शरीर त्यागे हुये वेद और परमात्मा का भारी निन्दक अधर्मी था नीच २ सूकरादि योनियों में प्राप्त हुआ हो तो कुछ आश्चर्य नहीं क्यों कि पापियों की ऐसे ही गति धर्मशास्त्र में लिखी हैं इस की गद्दीवाले भी समाधि की बन्दगी पूजा चौका आरती करते हैं।

इसके आगे एक नास्तिक शाखा जो कबीर के नाम से गनेशसिंह क्षत्रिय मुकाम फतुहा समीप पटना के पंथ चला लिया है उस की व्यवस्था सुनिये सम्वत् १९४६ मास भादों में मैंने फतुहा जा कर गोकुलदास नामक अधिकारी से प्रश्न किया कि जगत् किस समय किसने रचा है और मुक्ति क्या चीज है उस ने उत्तर दिया कि जगत को किसी ने किसी समय में नहीं बनाया और न कभी बना है मैंने कहा कि कबीर के सर्व ग्रन्थों में सृष्टि उत्पत्ति और निःअक्षर शब्दरूप पुरुष में मिलजाना

मुक्ति लिखा है और वेदादि सत्यशास्त्रों में भी सृष्टि उत्पत्ति मुक्तिविषय भली भांति वर्णन है सो तुम लोग क्यों नहीं मानते तब उस ने कहा कि कबीर न कोई शख्स था न उस की कोई किताब है किन्तु धर्मदास के बनिया लोग महन्त जो पहिले भये हैं उन्हों ने भाट मौकर रख कर कबीर और धर्मदास के प्रश्न उत्तर उत्तर सहित असंभव मनमानी पोथियां बना लिये हैं और वेदादि की उत्पत्ति भठिहारिन और बनियानी के झगड़े के समान है जैसे:—एक लाला कहीं परदेश जाते रास्ते में क्षुधा लगी तब वह एक बनियानी के दुकान पर जा कर कहा कि मुझे खाने की सामग्री दे उसने कहा कि यह भठिहारिन के साथ मेरा गालीगलौझा हो रहा है जो मैं तवलने लगूंगी तो वह दासादखैनी गालियों में बढ़ि जाय गी, लाला बाले कि तुम तौलो मैं तेरे बदले गालियां दूंगा भठिहारिन से कहा कि तुम गालियां दे पीछे मैं भी दूंगा वह बोली कि जो गालियां मैं दूंगी सो तुम न देना लाला ने कहा बहुत बेहतर, वह गाली देने लगी जब २ गाली दे श्वांस ले तब २ लाला एक चोंगा में बन्द किया करें जब सब गाली दे चुकी तब बोली कि वह गाली दो जो मैं ना दिईहूं तब लाला दश पांच मनुष्य को इकट्ठा कर कहा कि तेरी सब गाली इस चोंगो में बन्द हैं अब लो इस चोंगा को मैं तेरे गुप्त उपस्थ में डालता हूं सो चोंगो योनि के तरह सब वेदशास्त्र

बने हैं " मैंने पूंछा कि फिर क्यों साधु बन लोगों को धोखा देते हो उस ने कहा कि जब तक आत्मा परमात्म शुभ चैतन्य वग़ैरह मानोगे तब तक मुक्त पद नहीं मिलेग मैंने कहा आपसब जगत् की उत्पत्ति मुक्ति वेदादि और आप पुरुषों का धर्म मार्ग नहीं मानते तो नास्तिक कोटि में हो उस ने कहा हो मैं जैसा मानता हूं वैसा सुनोः—

भजन ॥

सन्तो बीबी बड़ी बदोरी ! पांदहि आप ईगाहैं औरनि ऐसी मति की भोरी ॥ एक पाद बीबी जो पादा भये ब्रह्म अविनाशी । एक पाद त्रिदेवा उपजे एक पाद चौरासी ॥ एक पादते चारि अष्टि दश नव षट्शास्त्र बखानी ॥ एक पाद में सकल साधना शम दम आदि कराई ॥ एक पादते चारि अवस्था आदि अन्त करि गाई । एक ते आदि अन्त लों मानें पुरी बनाई ॥ एक पादते सृष्टि स्वाभाविक पांच तत्त्व अविनाशी ॥ मुख दे पादैं कान दे सूघैं दिख २ आवे हांसी ॥ दास कबीर के पाद बटोरत जन्म घनेरा जासी ॥

यह वचन दयालुदास महन्थ प्रथमाचार्य की बनाई हुई का प्रमाण दिया ये लोग कबीर का नाम रख पोथी बनातेहैं और बोला मुक्ति जैसे अब हैं ऐसे ही रहने का नाम है मैंने कहा अब तो देह धारे धरमवेद और परमात्मा की निन्दा में तत्पर हो और रोग शोक जन्म मरण अवस्था कर्म पक्षपातादि में बँधे हो अगर यही मुक्ति है तो तुम्हारी तरह सब जङ्गली

जानवर भी लादि हैं फिर सब मुक्तरूप हैं तुम में क्या विशेषता रही तब उसने कहा अनन्त वेद के पार अनन्त अक्षर लोक चैतन्य परमात्मा के पार पहुंचे सोई कबीर पंथी ॥

मैंने कहा कि तुम लोग तो इन किसी के पार न पहुंचे किन्तु यहां ही जानवरों के समान खाते सोते भांय भांय भूपते रहते हो और अनन्त वेद या बहुल परमात्मा हैं ही नहीं वेद चार ऋग् ,यजु, साम, अथर्व और परमात्म एक ही सत्यशास्त्रों में लिखा है भला कहो वह बीबी कौन थी जिस के पाद से परमात्म आदि बना है क्या कोई माता भगिनी तो नहीं थी ? वाहरे ! मूर्ख राज ऐसी मिथ्या बातें कहते लज्जा भी न आई सच है:—

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं—
स तस्य निन्दां सततं करोति ।
यथा किराती करिकुम्भजाता—
मुक्ताः परित्यज्य बिभर्ति गुञ्जाः ॥

यह किसी कविका श्लोक है—जो जिस का गुण नहीं जानता वह उस की निन्दा निरन्तर करता है जैसे जंगली भील गजमुक्ताओं को गुञ्जा का हार पहिन लेता है—अब संक्षेप से इस की गपोड़ी लिख बंशडोरी वालों का चाल चलन निवेदन करता हूं:—

(प्रश्न) इस वंश वाले चौका आरती करते तकिया गद्दी

समाधि की बंदगी पूजा करते झंझड़ी बजाय लोगों को शब्द संध्या गौरी आदि सुनाते हैं क्या इस को तुम असत्य कर सकोगे

(उत्तर) हां २ ठगने की लीला है जो चौका आरती करते हो उस से भीतर बाहर की लूटी आवें वालों का धन हरते हो स्वामियों का जाग है यही तकिया समाधि पूजना मूर्त्तिपूजा से न्यून नहीं इसलामियों का कर्म है बन्दगी साहेब कहने, टोपी देने से यवनभेष भाषा लक्षित होती है क्योंकि आर्य्यों के स्वभाव और भाषा से विरुद्ध है इस से विद्याधर्म नहीं बढ़ सकता ॥

(प्रश्न) हम लोग पान और परवाना देते एक नारियल चेला कर फोड़ते कि निरञ्जन अन्यायी का शिर है और सींक चेला कर तोड़ते कि यम का तिनका टूटना लिखा है श्वासमें «सोऽहं» जाप करते और यह मन्त्र भी देते हैं।

(अजरनाम अमरनाम सत्यनाम कबीर)

और हमारे वंश में महन्त लोग भारी सिद्ध हुये हैं कि जिन की कृपा से सर्व जीव शब्दरूप अमरलोक निवासी साहेब में मिल जाते पुनः कभी नहीं जन्म होता ॥

(उत्तर) पान खा के यहीं ही मल कर देते हैं क्यों पहुंचावेगा परवाना भी देखा निर्बुद्धियों का धन लूटते हैं नारियल निरञ्जन का शिर नहीं किन्तु फल है अगर निरञ्जन अपने परमेश्वर के बेटे का शिर मान फोड़ते खाते हो तो तुम कहीं हो खसोट गुरुहत्या पाप भी लगता है उस शिर गूदाके

भक्षण से तुम सब प्रत्यक्ष ही मांसाहारी मलिनाधारी बनते हो क्योंकि अनुरागादि ग्रन्थों में निरञ्जन सोलहवें सुतों में से एक हाथ नख मुखादि अवयव वाला लिखा है जब तुम्हारे साहेब अपनी देह की मैल से पुत्री स्त्री भग की बना भेजा और निरञ्जन नख से भग बना भोग किया अपने भाई कूर्म का पेट फाड़ आकाशादि लोक निकाला इन को जो सत्य माने उसको भी नखनख से बना भोग करना चाहिये अगरचह नहो सकै तो वह भी नहीं बना झूंठ लिखा है और तिनुका टूटने से कर्मों का फल भोगना कभी बन्द नहीं रह सकता श्वासा सोऽहं वायु है उस से और मन्त्र जपने से मोक्ष नहीं प्राप्त होगी मोक्ष चाहो तो वेदादि शास्त्रों को पढ़ो सुनो बिचारो और बम्बई में धर्मदासवालों की लड़ाई का फैसला मैंने देखा पढ़ा था उस में साफ़ २ लिखा था कि धीरज नाम नवां कहार की रांड़ रख लिया उस से मुकुन्द उर्फ़ उग्र नाम पुत्र हुआ जो कि सुमिरनदास से गद्दी हारि बैठा पीछे बारह पीढ़ी महन्तों का वृत्तान्त ऐसा बुरा था कि दो२ चार २ रांड़ बलात्कार रखते थे भाई हो ! कुकर्मी सिद्ध नहीं हो सकते ऐसे कर्मों से मोक्ष हो तो बैल गधा आदि को भी होना चाहिये और जो लोग इन से महन्ती ले बैराग आदि का अभिमान बतलाते हैं वे नीच से भी नीच पक्षपाती लुटेरे हैं जब सोलह सुतवाली सृष्टि सत्य अखण्ड होती तो अक्षर लोक शब्दरूप पुरुष में मिलाना मुक्ति

भी ठीक ठहरती अगर यह सृष्टिक्रम खण्डन हो गया तो तुम्हारा मजहब झूंठा जोलाहाने वेद और परमात्मा की निन्दा, अधर्म बढ़ाने के लिये चलाया था जब मुसलमान आर्यावर्त्त में आये तब नाना प्रकार के नाम, रूप धर वेदों की मर्यादा तोड़ना आरम्भ किया था अजी महाशय ! प्रियवर मित्रवर्गों मैं कुछ विरुद्ध वैरभाव से एक अक्षर भी नहीं लिखता हूं किन्तु जीवों के हितार्थ प्रकाश करताहूं कि इस धींगाधींगी में बच कर आर्यावर्त्तीय वेदानुसार उपासना और व्यवहार वा परमार्थ ग्रहण कर सुख उठावैं ॥ ग्रन्थ टंगुआर में लिखा हैः—

चौपाई।

तेहि श्वासा पारस भय भारी कायाते मधि मैल निकारी
तनते मैल काढ़ि प्रभु लीन्हा सोई मैल रचि पुत्री कीन्हा
रचि पुत्री कर ऊपर लीन्हा उपजे प्रेम धर्म को दीन्हा।

अब देखिये कबीर का परमेश्वर महा मैला था कि जिस की देह की मैल से लड़की बनी कहीं इच्छा से कहीं मैलसे उस कन्या का बनना लिखा है। बीजक में लिखा हैः—

झूठी का मण्डाना है धरती आसमान ॥

समीक्षक—भला झूठा कभी जगत् बना सक्ता है वेदों में तो परमेश्वर ऐसा वर्णन हैं ॥

पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर०

शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वय-
म्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समा-
भ्यः ॥ २ ॥ यजुर्वेद अध्याय ४० ॥ ८ ॥

व्याख्यान—(सपर्यगात्) सो परमात्मा आकाश के समान सब जगह में परिपूर्ण व्यापक है (शुक्रम्) सब जगत् का करने वाला वही है (अकायम्) और कभी शरीर अवतार नहीं धारण करता क्योंकि वह अखण्ड और अनन्त निर्विकार है इस से देह धारण कभी नहीं करता उस से अधिक कोई पदार्थ नहीं है इसी से ईश्वर का शरीर धारण करना कभी नहीं बन सक्ता (अव्रणम्) वह अखण्ड एक रस अच्छेद्य अभेद्य निष्कम्प और अचल है इस से अंशांशीभाव भी उस में नहीं है क्योंकि उसमें छिद्र किसी प्रकार का नहीं हो सक्ता (अस्नाविरम्) नाड़ी आदि का प्रतिबन्ध निरोध भी उसका नहीं हो सक्ता अतिसूक्ष्म होने स ईश्वर को कोई आवरण नहीं हो सक्ता (शुद्धम्) वह परमात्मा सदैव निर्मल अविद्यादि जन्म, मरण, हर्ष, शोक, क्षुधा, तृषादि दोषोपाधियोंसे रहित है शुद्ध की उपासना करने वाला शुद्ध ही होता है (अपापविद्धम्) परमात्मा कभी अन्याय नहीं करता क्योंकि वह सदैव न्याय कारी ही है (कविः) त्रैकालज्ञ, सर्ववित् महाविद्यावान् जिस की विद्या का अन्त कोई कभी नहीं ले सक्ता (मनीषी) सब जीवों के मन विज्ञान का साक्षी सब के मन

का दमन करने वाला है (परिभूः) सब दिशा सब जगह से परिपूर्ण हो रहा है सब के ऊपर विराजमान है (स्वयम्भूः) जिस का आदि कारण माता पिता उत्पादक कोई नहीं किन्तु वही सब का आदिकारण (यथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः) उस ईश्वर ने अपनी प्रजा को यथावत् सत्य २ विद्या जो चारि वेद उन का सब मनुष्यों के परमहितार्थ उपदेश किया है उस हमारे दयामय पिता परमेश्वर ने बड़ी कृपा से अविद्यान्धकारका नाशक वेदविद्या रूप सूर्य प्रकाशित किया है और सब का आदि कारण परमात्मा है ऐसा अवश्य मानना चाहिये ऐसे विद्या पुस्तक का भी आदि कारण ईश्वर को निश्चित मानना चाहिये विद्या का उपदेश ईश्वरने अपनी कृपा से किया है क्योंकि हम लोगों के लिये उसने सब पदार्थों का दान किया है तो विद्यादानक्यों न करेगा सर्वोत्कृष्ट विद्या और पदार्थोंका दान परमात्माने अवश्य कियाहै तो वेदोंके विना अन्य कोई पुस्तक संसारमें ईश्वरोक्त नहींहै जैसा पूर्ण विद्यावान् और न्यायकारी ईश्वरहै वैसाही वेद पुस्तक भी है अन्य कोई पुस्तक ईश्वरकृत वेदके तुल्य वा अधिक नहींहै अधिक विचार इन बातोंका सत्यार्थप्रकाश में देख लीजिये । भाई हो मनुष्य में और जो चाहेमो हो परन्तु अक्ल का अन्धा बुद्धिका दरिद्री न होना चाहिये क्योंकि कबीर पंथी कहते हैं ॥

जजुर कहै सर्गन परमेश्वर दश अवतार धराया ॥
गोपिन के संग रहस रच्यो है माखन चोर चुराया ॥

और देखा ऊपर यजुर्वेदके वाक्यसे परमेश्वर का जन्म लेना नहीं सिद्ध होता है। भवतारन की बातें सुनो ॥

कहैं कबीर सुनों मम बानी छांनिलेव जो कहीं बखानी। आदि न अन्त नहीं तब माया। उत्पत्ति प्रलभ नहिं तबकाया॥ सुन्न नै शिखर तत्त्व नहिंमूला। कारण सूक्ष्म नहीं स्थूला। आदि ब्रह्म नहि और ओ३म्कारा। नाहिं निरञ्जन नहिं अवतारा॥ नौ अवतार न चौबिस रूपा। तब नहिं होते ज्योतिसरूपा॥ नहिं तब बीज नहीं अंकूरा। आदि अमीं नहिं चन्दन सूरा॥ धर्मदास तहं समुझ के रहना। काहू से कछुवो ना कहना ॥

समीक्षक-संवत् १२२० में नीरू जोलाहा अपनी स्त्री को ससुरालसे लिये जाता था एक मानसरोवर तलाईमें जुलहाके मध्य गली में उसीरात का जन्मा बालक पाया घर ले गया ऐसा बरसावली आदि ग्रन्थोंमें कबीरने लिखाहै किसी कामार्थिनी ने डाल दी थी भोला भाला अविद्वान् आदमी था आदि उत्पत्ति क्या जाने झूठ लिखा कि तब ओ३म् नाम परमात्मा और बीज कारण जगत्का एको न था बिना बीज के वृक्ष हो ही नहीं सकता सातसौ उन्तीस साल इसको जन्में हुये ॥

द्वा सपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्न

न्नन्यो अभिचाकशीति ॥१॥ ऋ० मं० ॥१॥ सू०
१६४ ॥ मं० ॥ २० ॥

(द्वा) जो ब्रह्म और जीव दोनों अनादि (सुपर्णा) चैतन्यता और पालनादि गुणोंमें सदृश (सयुजा) व्याप्य व्यापक भाव से संयुक्त (सखाया) परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और (समानम्) वैसाही वृक्षम् अनादि मूल बीजरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्नभिन्न हो जाताहै वह तीसरा अनादि यथार्थ तीनोंके गुण कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं इन जीव और ब्रह्ममें से एक जो जीवहै वह इस वृक्षरूप संसार में पाप पुण्य रूप फलों को (स्वादु, अत्ति) अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलोंको (अनश्नन्) न भोक्ता हुआ चारो ओर अर्थात् भीतर बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है जीव ईश्वर दोनों में प्रकृति भिन्नस्वरूप तीनों अनादि हैं जो इन को कबीर सुने जाने होता तो पूर्वोक्त मिथ्या क्यों बक देता। देखो ! वेदोंके और जगत् को बने हुये एक अर्ब छानवे क्रोड़ आठ लाख बावन हजार नौ सौ नव्वे वर्ष हुये हैं

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मसनातनम् ।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम् ॥

मनुजी कहते हैं—अग्नि,वायु,सूर्य,अङ्गिरा इन चारों महात्मा

षियों के आत्मामें चारों वेदोंका प्रकाश परमात्माने ही किया है उनसे ब्रह्मादिकों ने पढ़ाथा अब वे बातें झूठ हुई कि वेद ब्रह्मा समुद्र मथि लाया या रचना किया और मदनने भी कहा है ॥

ब्रह्मा वेद सुधारिया उन्ह कीन्हा बहुत निषेध ।
मदन तेन्हीं नहि पाइया निज रामनाम को भेद ॥

भला ! जब ब्रह्मादि ही परमेश्वर का भेद न पाया तो मदनलाल अविद्वान् क्या जानैं । इस का नाम प्रकाशकी गप्पें सुनिये—जिसमें ब्रह्मादि महाऋषियों की कैसी भद्दी निन्दा उड़ाई है ॥

प्रथमभेद जो पौ का कहिया । तीन लोक जाके बश रहिया ॥
प्रथम भये वश तीनों देवा । मूल जानि पौ कीन्हों सेवा ॥
लखि नहिं पड़ी मूलको वाणी ॥ छाया मूल मूल पहिचानी ॥
योगी यती तपी सन्न्यासी । पौके फन्दे फिरैं उदासी ॥

समीक्षक—ये लोग पौ छायाको कहते हैं कि ब्रह्मादि महर्षि सब अपनी छाया ही को परमेश्वर मानि बहि गये अर्थात् जगत् और जीवकी कल्पना भूलसे बना उसी में अरुझे सो मिथ्या कल्पना कबीरपन्थी आदि अविद्वान् होने के कारण लिखतेहैं न जीवकी भूल से सृष्टि बनी न ब्रह्मादि छायाको ईश्वर माना था इस का प्रमाण ब्राह्मण ग्रन्थ और वेदों में देखो । दूसरे भेदकी बातें सुनो ॥

हे जिअरा तू अमरलोकका पड़ा कालवश आई हो ।

जबै सरूपी देव निरञ्जन तुम्हैं राख भरमाई हो ॥
पांच पचीस तीन का पिंजड़ा तामे तुम को राखा हो ।
तुमको बिसरिगई सुधि घरकी महिमा आपनि भाषा हो ॥
चारि वेद जाकी है श्वासा ब्रह्मा स्तुति गाई हो ।
सो कथि ब्रह्मा जगत् भुलाये तेहि मारग सब जाई हो ॥
जोग जाप नेम व्रत पूजा बहु प्रपंच अपारा हो ।
जैसे वधिक ओट टाटी के दे विश्वास अहारा हो ॥
सतगुरु पीव जीवके रक्षक तासे करौ मिलाना हो ।
जिनके मिले परमसुख उपजे पावो पद निर्वाना हो ॥
जुगन २ हम आय चेतावा कोई हंस हमारा हो ॥
कहैं कबीर ताहि पहुंचावा सत्य पुरुष दर्बारा हो ॥

समीक्षक—भला जब निरंजन साकार हाथ मुख नख आदि वाला इस के हर ग्रन्थों में लिखा है कि चौसठ युग ध्यान किया कूर्म का उदर फाड़ा तब फिर अन्तःकरण मन का नाम निरंजन नामक क्यों लिखा इस के झूठ होने से वह भी झूठ होना चाहिये और योग जाप यम नियम धर्म वेदानुसार करना निष्फल नहीं वधिक के टाटी के समान कहना अधर्म कपटी लोगों की बातें हैं सतगुरु तो आप्त धर्मात्मा सत्यवादी वेदानुयायी महाशयों का नाम है और कबीरादि असत्यवादियों, अविद्वानों का नाम असतगुरु कहना ठीक है और सात सौ वर्ष के उधर का कोई ग्रन्थ इस मत में नहीं है इस से युग २ में आना जो कहा सो भी झूठ है मैंने नव साल त

भारी परिश्रम कर कबीरपन्थादि वालों की कुल किताबें पढ़ी विचारी हैं और जब कि कबीर का शब्दरूप परमेश्वर अपने शरीर से निरंजन पुत्र और आद्या पुत्री रच बेटा बेटी का "निकाह" किया तो निर्दोष सत्पुरुष नहीं हो सक्ता ॥

तीसरा भेद—सब उजूद के अन्दरें हैं मौजूद कबीर ॥

उत्तर-जब सब कायाधारी कबीर हैं तो काक कूकर सूकरादि को भी गुरू मान उन्हीं की गति को कबीरपन्थी प्राप्त होगये हों वा होवेंगे और चौथा विज्ञान भेद की बातें बलिराम जवाहिर के बहस में खंडन हो चुकी हैं ॥

(प्रश्न) भला काशी कबीर चौरा वाले तो अच्छे हैं ॥

उत्तर—जैसे भूतनाथ वैसे प्रेतनाथ नहीं किताबों को ये लोग भी मानते हैं और चौका आरती आदि कर्म कर वेदादि सत्य विद्या से विमुख हो गरीब अनाथों को लूटते हैं।

एक समय मैंभी उस स्थान पर गया, देखा दश पन्द्रह भोंदू एक मन्दिर के मुहारे पर बैठे उस मन्दिर की ओर झुकि २ बन्दगी साहब २ कहते थे मैंने भी उन लोगों से कहा कि सब साहबान को बन्दगी तब उन सबों ने गुस्सा कर कहा कि साहब के चरन की बन्दगी छोड़ हमारी क्यों किया मैंने पूछा साहबका चरण कहां है उन्हों ने भीतर की ओर दिखलाया मन्दिरके बीच श्वेत पत्थर की पट्टियामें बालक के चरणाकार चरण बना था मैंने कहा क्या लड़कपनमें कबीर का पैर काट

के गाड़ रक्खा है उन्हों ने कहा नहीं इस पत्थर पर बनवा लिया है मैंने कहा क्या तुम लोग पत्थर पुजारी हो अरे! कबीरमत में तो मूर्त्तिपूजा मना है मैं तो साधु जानि आया यह नहीं समझा कि बुतपरस्त हो लो मैं जाता हूं ऐसे ही गरीबपंथी आपापंथी नांदियापंथी धनौती वाले भी भारी वेदविरोधी सत्यानाशी जंगली लोगों को बहका २ चेला बना खेती आदि धन्धामें बझा व्यर्थ खराब करते हैं और नारायणपंथी शराब मांसभी पीते खाते दुष्टाचारी म्लेच्छ जीवों कोभ्रष्ट करते हैं ये शाखें सर्व कबीरपंथी अपने को मानते हैं॥

(प्रश्न) भला इनको जान दो गोविन्द पलटूदास मतवाले तो अच्छे हैं क्योंकि साखी शब्द खूब विचित्र बनाये हैं॥

(उत्तर) भाई हो! अच्छा तो वेदमार्ग है ग्रहण हो सके तो ग्रहण करो नहीं तो भवसिन्धु से गोता ही खाते रहोगे लो इन की अण्ड बण्ड बातें सुनो यह मत भी यवन यारी नामक से आरम्भ हुआ है यारी बूला गुलाल भीखा गोविन्द तिस का चेला पलटूदास बनिया हुआ जोकि जहां तहां वेद परमात्मा की निन्दा गाया है सुनो इन की साखी शब्द ग्रन्थ गुष्ट गुलाल भीखा साहब॥

चौपाई॥

सुन्न सेवाय मं दूसर कोई। जानो ब्रह्म अखंडितओई॥
सुन्नै बोलत जीव कहावै। गङ्गा जमुना सुन्न सुहावै॥

आतम सुन्न सरूप विचारी । नाम महातम शब्द उचारी ॥
तेहिते सुन्न ब्रह्म दुई नाही । ब्रह्म मिलो सो सुन्न समाही ॥

दोहा ।

भीखा इतनो फेर है. भरम परो जिय मांहि ।
नाता केवल सुन्न है जीव ब्रह्म कुछ नांहि ॥

(समीक्षक)—वाहरे ! मूर्ख शिरोमणि तुम भी ब्रह्म जीव को सुन्न मानि कुमति का बीज बोया क्यों सुन्न जड़ के सदृश जीव ब्रह्म भी जड़ है । जगत् की उत्पत्ति कैसी असम्भव कही है सुनो—

कर्त्ता सृष्टि करन जब लागे, तब मांटी बिन काम न जागे । इच्छा मांटी तेहि छन आई, मूल पृथिवी मुद्रा समुदाई । मांटी भूरि पिंड ना बनई । कियो अकर्षन जल तब महई जल अधिकार मांटी विहलाई । दूजे आप मुद्रा कहलाई ॥ मांटी ढील पिंड नहिं बनई । हरि की मौज तेज तब गनई । तेज परवेश पिंड बनि आई । तीजे मुद्रा तेज कहलाई ॥ अग्नि प्रज्वलित होय या ऐसे, मनि बुझि पवन उठो तब तैसे : भयो प्रकाश पवन संग- लहई चौथे मुद्रा वाय सो कहई ॥ वाय-अप्रबल थामि न जाई । मौजे मौज आकाश बनाई । शब्द पवन तब सुमृत भेऊ । पंचवें नभ मुद्रा सम भेऊ ॥

(समीक्षक)—क्या इच्छा कोई पदार्थ द्रव्य का नाम है या गुण का ? अगर गुण कहो तो वे द्रव्य रचना होही नहीं

सक्ती जैसे कुम्हार मीज गुण से विना वे तो मिट्टी घड़ा आदि कोई वस्तु कभी नहीं बना सकता क्योंकि गुण गुणी अलग नहीं होते एक ही स्वरूप के रहते हैं तिसपर भी लालबुभक्कड़ सृष्टि कथन करने में परमेश्वर के सर्वज्ञ सर्वशक्तिमत्त्वादि धर्म खो बैठे पहिले परमेश्वर ने मौज से मिट्टी बनायी सो-सूखी थी तिस से पिंड न बना तब पश्चात् जल का आकर्षण किया और मिट्टी में वे अन्दाज़ डाला बिहलाय चली जब परमेश्वर ने यह न जाना कि अधिक पानी से मिट्टी ढीली होगी तब मिट्टी कड़ी होने के लिये पश्चात् अग्नि मौज से बनाया यहां भी न समझा कि अग्नि विना हवा प्रज्वलित न होगी इसी तरह सर्वतत्त्वों के बनाते समय भूला। भला अगर यह विद्वान् शख्स होता तो ईश्वर को भूल चूक सहित क्यों लिखता। देखो वेदादि सत्यशास्त्रों में ईश्वर ने कैसे भूल चूक रहित होकर सृष्टि रचन किया है॥

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः॥ तै० ब्रा० अ० १॥

अर्थात् उस परमेश्वर ने प्रकृति से आकाश अवकाश अ-

र्थात् जो कारणरूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था उस को इकट्ठा करने से अवकाश उत्पन्नसा किया वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि विना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहां ठहर सकें आकाश के पश्चात् वायु, वायु के पश्चात् अग्नि, अग्नि के पश्चात् जल, जल के पश्चात् पृथिवी, पृथिवी से ओ-षधि, ओषधियोंसे अन्न, अन्नसे वीर्य्य, वीर्यसे पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होता है अर्थात् जो सूक्ष्म से सूक्ष्म जिसका विभाग नहीं हो सकता उस का नाम परमाणु, साठ परमाणुओं के मिले हुये का नाम अणु दो अणुओं का एक द्व्यणुक जो स्थूल वायु है तीन द्व्यणुक का अग्नि चारि द्व्यणुक का जल पांच द्व्यणुक का पृथिवी अर्थात् तीन द्व्यणुक को दूना करने से पृथिवी आदि दृश्य पदार्थ उत्पन्न होता है पल्टूदासी की बातें सुनो ॥

हम बासी वह देश के पूछता क्या है चांदमा सूर्य ना दिवस रजनी ॥ तीनकी गम्य ना कर्ता कर्म ना लोक ना वेद ना पवन पानी । शेष पहुंचे नहीं थकित भये सारदा ज्ञान ना ध्यान ना ब्रह्मज्ञानी ॥ पाप ना पुण्य ना नर्क ना स्वर्ग है शब्द ना सुरति ना तान तानी ॥ अखिल ना लोक है नाहिं प्रपन्च है हद्द अनहद्द ना उठल बानी । दास पल्टू कहै सुन्न भी नाहिं है सन्तकी बात कोई सन्त जानी ॥

समीक्षक—भला जहां पर ज्ञान ध्यान ब्रह्मज्ञानी और कर्त्तानाम परमात्मा आकाश भी नहीं है तो पल्टू बानियां वहां क्या

लतापत्रा रख टेनी मारा करता था ऐसे २ अविद्वानों का नाम सन्त नहीं है क्योंकि कर्त्ता का कभी अभाव नहीं होता और वेद में तो यथार्थ परमात्मा का ज्ञान अनादि है जिस मत का अनुयायी कहै कि वेद भी नहीं उस का मत झूंठा कोई विद्वान् नहीं मानैगा या अगर कोई बाल्यावस्था में फंस भी गया होगा तो विद्वानों के सत्संग करने से त्याग भी सकता है ऐसे ही सत्यनामी मुर्दों को कबुर दे पूजते, माथे में राख लगा "सोऽहं श्वासा को ब्रह्म मानते हैं ऐसे पागलनाम सत्यनामी काम, असत्यनामी का करते हैं। थोड़ा और भी कुछ सुनियेः—

एक मोहना जाति के बढ़ई ने फैज़ाबाद के समीप एक पंथ चलालिया है चेलों का नाम अहमक़शाह बेवकूफ़शाह गबड़गण्डशाह रखता है संवत् १९४८ मास भादों में मैं फैज़ाबाद गया था सज्जन लोग मुझ को उस के पास ले गये सलनी नाम की धोबिन ने पहिले का मोहना पश्चात् बालाशाह नाम रक्खा था हम लोगों को दूर ही से जूता उतारने का हल्ला मचाया लेकिन किसी ने न उतारा तब धोबिन कहने लगी तुम सबने न बन्दगी किया न कहा माना ॥

तब देवीदास नामी भक्त बोले तुझै धोबिन समझ न माना ॥

उसने कहा अभी मोहनरचित पोथी सुनाऊंगी तो छक्का छूटि जावैगा ॥

मैंने कहा सुनाओ ॥

वह सुनाने लगी कि चारि वेद वाले ब्रह्मादि ऋषि सब नर्क को गये ॥

मैं बोला कि तुम क्यों अपनी ज़िन्दगी नष्ट भ्रष्ट करती हो कपड़ा धोय धाय समय बिताओ और भक्ति करो । तब टांय २ भूषने लगी सज्जन मित्र लोगो !! आर्यावर्त्त को इन्हीं स्वार्थी मतवालों ने बिगाड़ डाला है कि सुधरना कठिन हो रहा है समझते जाइये ॥

यवन मुहम्मदरचित रवाइत सहीहेको किसी ने तर्जुमा करि नूरनामे किताब नाम रक्खा है इस सृष्टिविधान को मैं महाशयों के सामने प्रकाश करता हूं- नबी जबरील एकदिन आपस में बातचीत करने लगे मगर फातमा भी उपस्थित थी बोली कि तुम बड़े हो या कि जबरील ?

नबी—कहा मुझे खुदाने सब से बड़ा रचा है—

जबरील—कहा कि नबी ही बड़े हैं व लेकिन उमर में मैं ही बड़ा हूं क्योंकि जब खुदा ने मुझे बनाया उस वक्त सेवाय खुदा के दूसरा कोई न था मगर मुझ से पहिले एक सितारा जगमगा पैदा किया था वह सत्तर हज़ार साल चमकता था ॥

नबी ने कहा वह मेरा ही नूर था पचास लाख वर्ष से पैदा हुआ था खुदा ने अपनी कुदरत से उसे बनाया पुनः मुहम्मद ने जबरील से कहा कि जिस समय मेरा नूर बना उसी वक्त खुदा को सिजदा किया यह फर्मान खुदाने भेजा कि ऐ नूर ! नबी शिर सिजदा से उठा खुशी कर मेरा तो तुझी से मकसद

तमाम है और तुझी से मतलब काम है तेरे मुहब्बत से मैंने यह दशदरिया दिया १ एकुमइलम २ क्षमा ३ इश्क ४ खौफखुदा ५ दया ६ सबुर वो दान ७ प्रार्थना ८ अकिल ९ फकीरी १० नूर याने उजाला। नबी फिर कहा कि ऐ जबरील! मेरे नूर को तुम और बात सुनो कि जब जमीं आसमान आदि नहीं पैदा था तभी मेरा नूर पैदा था हर एक दरिया में दशदश हज़ार साल नूर ने सिजदे बेशुमार किया पुनः खुदा ने सत्तर हजार साल किया मेरे नूर को खुदा खुद जानता है नूर चुपचाप गोशेनशीन हुआ क्योंकि खुदा का हुकुम आया था जब कि मुकर्रर साल बीत गये पुनः खुदा नूर याने मुहम्मद से कहा कि चल गुफा से बाहर निकल जो कुछ मैं कहूं उस पर अमल कर तू मेरे फर्मान से सारा बदन मिला वे और मुहम्मद ने कहा कि खुदा ने औवल दरख्त एक पैदा किये उस का नाम शजलहकीं मातबर रक्खा पेड़ एक शाखें थी उस में हज़ार उस की कुदरत का कुछशुमार नहीं मेरानूर फिर हक्कनेपैदा किया अपने नूर से मुहम्मद का नूर अलग किया बहुत खूबरौशन वह जोतीसा था फिर बहुत साल उस नूर को परदे में रक्खा पुनः मोरकी शकल बनाकर उस दरख्त पर रहने को जगह दिया उस दरख्त पर नूर का कयाम और करार सत्तरहज़ार साल रहा खुदा की जप हरदम करता रहा पीछे खुदा ने एक कल आईबेसी पैदा किया उस दरख्त पर रक्खा उस के तरफ मोरं

ने नज़र किया आईने के रूबरू हुआ उस आईने को देख नूर हैरान हो गया अर्थात् अच्छी शक्ल अपनी देख शर्मा गया उस वक्त पांच सिजदे किया तब से पांच वक्ती निमाज उम्मत में जारी हुई ॥ ख़ुदाने नज़र किया तो नूर के शिरसे पांव तक पसीना बहता पाया ख़ुदा से नूर शर्माना इसीसे पसीना बह निकला जो बदन हिलनेसे बिंदु बेशुमार गिरे मुखसे एकलाख चौबीसहज़ार बिन्दु चुये उनसे पैग़म्बर हुये उसकी गिनती ख़ुदा जानताहै जो माथेसे बिन्दु गिरे वही तीनसौ तेरह हरिकारे हुये जो लाखों बिन्दु तनसे गिरे वह सब फ़रिश्ते बने और जो लिलारसे गिरे वह नहरें बह चलीं जो दो आंखोंसे चार बिन्दु गिरे वे चारो मुसाहिब ख़ुदाकेहुये चार बिन्दु कानसे चुये वहां तख्त कुरसी तख्ती कलम बने जो पखरेसे चुये वही चांद सूर्य बने जो नाक से बिन्दु गिरे उनसे बहिश्त दोज़ख़ बना ग़रज़ पैदायशका कारण नूर मुहम्मदका पसीना है ऐसा मुहम्मद ने खुद कहाहै फिर ख़ुदाने कहा ऐ नूर नबी ! नज़र उठा देख कि आगे पीछे दाहिने बांयें क्याखुश चमक है फिर जिधर नूरने देखा चारोओर नूरहीनूर नज़रपड़ा वह चार मुसाहब (अबूबक्र, उमर, उस्मान अली थे) फिर उस नूरने सत्तरहज़ार ख़ुदाकी जाप किया तो सब अम्बिया पैदा हुई उसी नूरसे कुल अरवाह यानी जीव बने फिर ख़ुदाने कुदरतसे फानूस मंगाके रंग मुर्ख बनाया फिर जब नजर किया

अर्थात् जाहिरमें भी देखा साफया फिर खुदाने मुहम्मदकी अपनीसी शकल बनाया उसे फानूस में रक्खा ऐसा नाजसे खड़ा किया जैसे कोई निमाज पढ़ता हो तब रूह ने परिक्रमा किया फिर सबोंने तसबीह पढ़ी एकहजार वर्ष तक, फिर खुदा ने कहा कि ऐ नूर नबी ! तेरी खातिर मुझे सब भांति करना है तेरे वास्ते मैंने चार चीज बनाया पानी अग्नि हवा मिट्टी तू इनको इख्तियार कर कि तेरी पैगम्बरी मैं कबूल करूं तब नूर पानीकेपासगयादेखा पानी बहरहा है मुहम्मद कहासलाम-

पानी भी कहा सलाम. पानीने पूछा तेरा क्या नाम है?

मैं बन्दे खुदाका हूं उसीने मुझेभी बनाया पानी से पूछा तू दुनियां में क्या काम करेगा उसने कहा जो मेरे मनमेंहोगा

नूरने कहा कि बन्देको अपने मतलबसे क्या कामहै जिस बात में खुदा राजी हो वही काम बन्दों को करना चाहिये तू अपना ऐब तो देख ।

पानी बोला मुझ में क्या ऐब है बतावो ?

तब मुहम्मद बोले खुदा बन्दों को तुम्हींसे बनावेगा तब पानीने कहा तुम बेऐब पाकहो फिर मुहम्मद बोला कि एक खुदा पाकहै और बन्दे सब ऐबसे भरेहैं फिर पानी बन्दगी कबूल किया इसी तरह अग्नि हवा मिट्टी सबसे मुहम्मद बातचीत सलाम किया ॥

समीक्षक—भला जब ज़मीन आसमान पैदा ही न था तो दरख्त मोर आईना कहां रह सक्ताहै उसी मिथ्यावादी की

बेहूदा अक़्ल पर रहा होगा जब सूर्य चन्द्रमा पहिले नहीं थे तो इतनी सालों की गिनती कैसे किया जा ख़ास खुदाके नूर से मुहम्मद का नूर यानी वजूद निकला तो मुहम्मद भी खुदा ही हुआ जैसा पानीसे पानी लहरि पानी हां कहालाहै तो फिर तसबीह सिजदा जो किया सो व्यर्थ हो गई जब खुदा नूर यानी उजाला है तो क्या उजाला भी बोल कह सक्ता है क्योंकि उजाला जड़ है अगर नूरसे नूर नबी निकला तो अखण्ड चैतन्य नहीं क्योंकि चैतन्यसे हिस्सा नहीं बाहर होता अगर नूरने नूर बात्तों करता रहा तो निराकार सर्वज्ञ भी न रहा कोई मनुष्य होगा। अगर तब पसीनासे सब जीव पैदा हुये सूर्य चन्द्रमादि लोक बने तो आजकल वैसे क्यों नहीं बनाता यह बात ऐसीहै कि एक पासी की स्त्री बिरहागातीथीसुनो-

जेहि दिन विधना मोहि गढ़ैहैं वह दिन गढ़ै न कोय
मोरे जोग कोऊ नहीं एक चन्द्र होय तो होय ॥ मोरे गोड़ वाकी गिरीरे मैलिया वहसे चन्द्रमा होय।

जब नूर नबी खुदाही के नूरसे अलग हुआ था तो खुदासे शर्मा क्यों गया क्या कोई अपनेसे शर्माताहै वाहरे ! पोपभाई तुमने तो झूठी बातें बनाय बहुतों को बहका दिया किलाखों मनुष्य खूख्वार जानवर शख्तदिल बने गौओंके प्राण हत रहे हैं और इसी असत्य सृष्ट्युत्पत्ति वगैरः को देख भारतवर्ष में मुसलमान कबीर यारी आदि धूर्तोंने कबीरपन्थी सत्यनामी आदि पन्थ चला कबर पुजाने वाले साहब बन्दगी आदि यवन भाषा सिखाय नष्ट भ्रष्ट कर फुसला फुसला गृहस्थोंके बेटाबेटी

ब्रह्मकाय धन धर्मका नाशकर दिया । ये स्वार्थसिन्धु जब गृहस्थांके पास गये या उनके लड़के प्राणी इन पंथ वालोंके पा जातेहैं तो ये धूर्त लोग कहतेहैं कि माता पिता धन धा विद्या परमात्मा और वेदादि शास्त्र स्वप्न भांति जाल जीव क काल हैं इनसे निकल मेरे पास चले आवो तो एक सायत साहेब मालिकमें मिला देवें फिर कभी जन्म न हो और ऐसी मिथ्या बातें सुना उच्छिष्ट भी खिला अपना कर लेतेहैं ।

सन्तो सन्त विलग किन्ह कीन्हा ।
तुलसी ब्राह्मण बड़े कुलीना सर्वशास्त्र प्रवीना ।
नाभाजी भगीका बालक तासु परसादी लीना ॥

इत्यादि गपोड़े हांकते हैं विशेष मतमतान्तरकी व्य स्थ सृष्ट्युत्पत्ति मुक्तिकी साधना उपासना विनय प्रार्थना और शै शाक्त वैष्णव जैनी ईसाई मुसलमानादि के मतों का खण्ड तथा मण्डन सत्यार्थप्रकाश में देख लीजिये क्योंकि ऐसा नि उपम पुस्तक आर्यावर्त्त में कहीं न पाइयेगा ॥

संवत् १९४९ मास आषाढ़में मैंने फहम हलवाईसे पूछा कि जगत् कैसे बना उसने कहा कि चैतन्य की भूलसे । मैंने का कौन चैतन्य । उसने कहा हम ही जीव बोलताके । मैंने कह कि जब तुम्हारी भूलसे नाना सूर्यादि लोक बना तो अब श्रा कर सम्पन्न बने हो भला एक देश अलग बना कर राज्य क क्यों मटों की तरह खज्जुरी पीट विचारे अनाथों का मा मारते हो । तब तो चुप होगया भला ! ऐसे २ मूर्ख व्यर्थ कु तर्की लोगोंका नाम निरर्थक फहमपति आदि रख वहके फिर

हैं इनका विश्वास कोई मत करे नहीं तो धन धर्मका मूलही उखाड़ा करेंगे और कबीरपंथीमें दास नाम सफेद टोपी पञ्च साहब बन्दगी कबुर देना वेद निन्दा सब शाखा वाले छाती खोल नीचोंके सन्मुख किया करते हैं ॥

संवत्१९४८ मास आषाढ़में मैंने महन्त विवेकपति और दीवान जवाहिरपति से पूछा कि मुक्ति होने पर जीव किस भांति रहैगा॥

दीवा०–शब्दरूप परमात्मामें मिलकर परमात्मा ही होगा ॥

हंसदेव–तो मृत्यु के पश्चात् या जीते ही में ॥

दीवा०–जीते ही समय मिलेगा ॥

हंस–तो आप लोग मिल गये हो वा नहीं ? ॥

दीवान–परमात्मा हो गया हूं ॥

हंस–तो सर्वज्ञादि परमात्मा वाला गुण तुम में क्यों नहीं आया और सोते समय नाकसे घों२ शब्द गड़र २ होताहैपक्ष-पात हर्ष शोकादि नाना प्रकार के अल्पज्ञगुण दीखते हैं ॥

दीवा०–अजी परमात्मा से भिन्न होकर सोते और नाना कर्म करते हैं ॥ [यहां वहां याही दुइ ठाऊं। सत्य कबीर कलि में मोर नाऊं ॥] [हंस–जब तुमतुम लोग परमात्मा में मिल निकल आते हो तो अपने कल्पित ईश्वर के शरीर में छिद्रकर खंड २ मलिन कर देते हो तो तुम्हारा ईश्वर अच्छेद्य अभेद्य निर्विकार भी न रहा मिल जाना प्रलय होने के सदृश है यह मुक्ति नहीं किन्तु महाबन्धन है ॥] [दीवा०–क्या जी झगड़ा करना चाहते हो ॥] [हंस–नहीं २ इस मत में शंका है ॥] [दीवा०–तो ऐसा ही मान लो ॥] [हंस–यह सब झूठ पा-

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु० परिग्रहण क्रमांक ५८५०
दयानन्द महिला पु०

गलपन को ... स्वीकार करूं ॥] [दीवा०-जो सत्य हो वही मानो ॥] [हंस०-सच्चा वेद मार्ग है महन्त ने पहिले करार किया था कि जो सत्य होगा उस को मैं भी अंगीकार कर लूंगा तो इस असत्य को त्याग तुम लोग भी वेदानुसार भक्ति उपासना मुक्ति मानलो इतने में वेदादि की निन्दा करने लगे] [मैं वहां से चल इस असत्य पंथ के खंडन में पाखण्डमतकुठार रचना आरम्भ किया इसके अमरमूल पुस्तक की बात सुनोः-] नाद शब्द जबही उच्चारा। तासों अक्षर भय विस्तारा॥ अक्षर हूं ते प्रगटी माया। संशय भई सबन की काया॥ जबही सुरलि शब्द मनलाया। मन स्थिर भये नहीं है माया॥ स्थिर मनघट लहरि समानी। मुक्तिरूप तबहीं पहिचानी॥ कंचन ब्रह्म आभूषण जीऊ। इतना भेद जीव अरु सीऊ॥ [उत्तर-देखो शब्दरूप पुरुषसे अक्षर यानी जीवकी उत्पत्ति और जीवसे माया यानी जगत् की उत्पत्ति असंभव लिखी है और लहरिरूप जीव का समुद्ररूप परमात्मा में लय होना मुक्ति माना है मदनपंथी मुगलानी ऊपर नोक उठी टोपी राम रजसे रंगी हुई देते हैं चलोंका नाम विवेकपति जगपति फहमपति आदि असम्भव रखते हैं भला ऐसे मूर्ख दरिद्रियों का नाम जगपति या फहमपति कभी हो सक्ता है और २ साख वाले श्वेत टोपीदास आदि नाम रखते हैं कबुर देना बन्दगी साहेब वेदनिन्दा सब करते हैं ॥] [कुछबातें कहों तो किताब बढ़ि जावै इस लिये संक्षेप से प्रकाश कर दिया ॥

इति श्री पाखण्डमतकुठारः समाप्तः ॥